<u>मानव–संचेतनावादी मनोविज्ञान</u>

वर्तमान में कामोन्मादी मनोविज्ञान

मानसिक विशालता के आधार पर शब्द/भाषा/साहित्य से अर्थ/वस्तु तक की गति संभव

प्रयोजन को सार्थक परंपरा के रूप प्रमाणित होने के उद्देश्य से मनोविज्ञान शास्त्र

जीवन क्रियाकलाप (मानसिकता–122 रूप) के रूप में विचार शैली; आधार – चिंतन,

प्रमाण – मानवीयतापूर्ण आचरण; विश्वासपूर्वक जीना

मानवीयतापूर्ण आचरण सहज व अनुसंधान क्यों?

मानव मानसिकता पूर्वक ही प्रकृति को पहचानता है। मनुष्य ही समझने योग्य इकाई

पदार्थ अवस्था – मृदा, पाषाण, मणि, धातु

मृदा– उर्वरक/अनुर्वरक; विद्युतग्राही नहीं

पाषाण– कठोर/अकठोर (मिश्रण)

मणि– एक ही प्रकार के अणु/परमाणु; ज्यादातर विद्युतग्राही नहीं; ज्यादातर किरणस्रावी, कुछ किरणग्राही

धातु – कठोर/अकठोर;विद्युतग्राही; विकिरणात्मक धातु/अजीर्ण परमाणु

प्राण अवस्था – अस्तित्व, पुष्टि सहित सारक–मारक आचरण

जीव अवस्था – अस्तित्व, पुष्टि आशा सहित वंशानुषंगीय आचरण

सभी अवस्थाओं में निश्चित आचरण की निरंतरता; अतः मानव सहज बहुआयामी अभिव्यक्ति सहज आचरण (सार्वभौम आचरण) को पहचानने की आवश्यकता

मानव बहुआयामी, प्रवर्तनशील, कार्यशील, विचारशील, मूल्यांकनशील, कल्पनाशील, अध्ययनशील, विश्लेषणशील, तुलनशील–इन सभी प्रवर्तन, विचार, व्यवहार, कार्य का एक निश्चित उद्देश्य

भौतिकवादी विधि से शरीर संवेदनाओं को आधार मानते हुए कामोन्मादी मानसिकता; मानव कुल के ह्रास का कारण

लाभोन्मादी ग्रसित प्रौद्योगिकी व्यवस्था का सार(भय–प्रलोभन केंद्रित)

1. अधिक उत्पादन; कम श्रम
2. अधिक लाभ; कम खर्च
3. अच्छी गुणवत्ता; कम वेस्टेज

व्यक्ति की भागीदारी दो प्रकार से

1. लाभ के आबंटन के आधार पर
2. उत्पादन, उसकी तादाद, गुणवत्ता के आधार पर

आदर्शवादी विधि (भय–प्रलोभन–आस्था केंद्रित)

आस्था का ध्रुव

1. ईश्वर व ईश्वर तुल्य व्यक्तियों के प्रति
2. राजा व संविधानों के प्रति
3. गुरूजनों व विविध साधना पद्धति के प्रति

दोनों विधाओं से मानव–जीवन, जीवनी क्रम, जीवन के निश्चित कार्यक्रम का अध्ययन संभव नहीं

अतः निश्चयात्मक, मानवीयतापूर्ण आचरण की परिकल्पना, अध्ययन और प्रमाण तथा इसे व्यावहारिक प्रयोजन के साथ बोधगम्य करा देना ही 'मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान' का उद्‌देश्य

मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान का आधार– अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन; अनुभवमूलक विधि से सहज सुलभ

सहज– अनुभवमूलक प्रणाली से अभिव्यक्त, अध्ययनमूलक प्रणाली से बोधगम्य

सुलभ– लोकव्यापीकरण की संभावना, आवश्यकता, प्रयोजन

अस्तित्व = सह–अस्तित्व = व्यापक में संपृक्त प्रकृति

प्रकृति चार अवस्थाओं के रूप में सूत्रित व व्याख्यायित(प्रकाशित)

प्रत्येक इकाई त्व सहित व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदार

अध्ययन करनेवाली इकाई मानव; मानव अध्ययनपूर्वक समझदार व तदनुसार कार्य–व्यवहार

अध्ययन (समझने)के मुद्दे–

1. अस्तित्व दर्शन
2. जीवन
3. मानवीयतापूर्ण आचरण

अभी तक मानव की यात्रा = जागृति सहज अभिलाषा सहित जागृति क्रम का प्रमाण

मानव सहज अपेक्षा :– न्याय, समाधान, प्रामाणिकता; अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था

न्याय, समाधान, सत्य का अध्ययन = स्थिति सत्य, वस्तु–स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य

स्थिति सत्य= संपूर्ण अस्तित्व = सत्ता(व्यापक) में संपृक्त प्रकृति(विभक्त) का अविभाज्य वर्तमान

संपृक्त– डूबा, भींगा, घिरा

भींगा– ऊर्जा संपन्नता = सत्तामयता = निरपेक्ष ऊर्जा व परम बल सहज रूप में वैभव = पारगामी होना

सत्ता= शून्य, परमात्मा, ज्ञान, स्थितिपूर्ण, अपरिमित

.स्थितिपूर्ण– निरंतर महिमा संपन्न = प्रकृति के संपूर्ण बल का नियंत्रण व संरक्षण

प्रकृति= स्थितिशील= 4 अवस्था, 4 पद

क्रिया का मूल रूप = परमाणु

क्रिया = श्रम, गति, परिणाम; हर क्रिया में पूर्णता सहज दिशा

प्रत्येक एक अपने वातावरण सहित संपूर्ण; हर वस्तु संपूर्णता के साथ त्व संपन्न वर्तमान

पदार्थ व प्राण अवस्था= भौतिक– रासायनिक क्रियाकलाप= विकास क्रम

विकसित परमाणु= जीवन= चैतन्य इकाई= परिणाम का अमरत्व= गठनपूर्णता; एक अस्तित्व सहज घटना

जागृतिपूर्णता के अर्थ में मानव परंपरा में समृद्धिपूर्ण मेधस के साथ जीवन का संयोजन

दिशा= परिणाम का अमरत्व, श्रम का विश्राम, गति का गंतव्य

मानव ही कल्पनाशील, कर्मस्वतंत्र व द्रष्टा

अस्तित्व = सर्वदेश, सर्वकाल, सर्ववस्तु (वास्तविकताओं को प्रकाशित करता हुआ प्रमाण)

देश– सत्ता; रचना संपन्न प्रकृति में ही देश चिन्हित

= आवास= सत्ता; रचना की अवधि रूपी विस्तार सीमित देश में

सत्ता = व्यापक, पारदर्शी, पारगामी

धरती अस्तित्व में एक अविभाज्य इकाई

भ्रमित मानव की कल्पनाशीलता, कर्मस्वतंत्रतावश सामुदायिक, आर्थिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकी विधा में प्रयोगवश नैसर्गिक संतुलित से असंतुलित

मनव संचेतना= संज्ञानशीलता से नियंत्रित संवेदनशीलता

मानव संचेतना विरोधी मानसिकता = संवेदनशील मानसिकता

ज्ञानावस्था = द्रष्टा पद प्रतिष्ठा सहित कर्ता, भोक्ता और पुनः द्रष्टा के रूप में जीने के रूप में जीने के कार्यक्रमों सहित अभिव्यक्त, संप्रेषणशील और प्रकाशित

अध्ययन हेतु वस्तुः

1. परमाणु में विकास, पूरकता, संक्रमण, जीवन, जीवनी क्रम, सकारात्मक समझ, पद्धति, प्रणाली, दिशा की ओर जीने का कार्यक्रम रूपी परिवारमूलक स्वराज्य और स्वानुशासनरूपी स्वतंत्रता
2. विकास, पूरकता, उदात्तीकरण, भौतिक–रासायनिक रचना–विरचना
3. जीवन, जीवन जागृति क्रिया, भौतिक–रासायनिक क्रिया
4. संक्रमण, जीवन, जीवन जागृति क्रम, जागृतिपूर्णता एवं उसकी निरंतरतापूर्वक मानव परंपरा वैभवशील
5. मानव= जीवन एवं शरीर(भौतिक–रासायनिक रचना) के संयुक्त रूप में

परमाणु में गठन, प्रत्येक गठन में एक से अधिक अंश, प्रत्येक गठन गति पथ (परिवेश) सहित कार्यशील; अंशों के बीच निश्चित दूरी, स्वभाव गति संपन्न

विकास क्रम– 1. अंशों का गठन 2. गति पथ 3. अंशों का प्रस्थापन–विस्थापन

भौतिक परमाणुः– मौलिक आचरण (निश्चित आचरण की निरंतरता); अणुबंधन, भारबंधन

भौतिक वस्तुएँ, अपने में समृद्ध होने के उपरांत रासायनिक क्रियाकलाप में भागीदारी

रासायनिक क्रियाकलाप– विभिन्न भौतिक अणुएँ (निश्चित अनुपात में मिलकर)अपने आचरण का त्यागकर नये आचरण के लिए तत्पर होना

रासायनिक द्रव्यों का निश्चित ताप व दाब के संयोग से प्राणकोषा एवं उससे रचित रचनाओं का निर्माण= उदात्तीकरण

जीवन

गठनपूर्ण परमाणु (सह–अस्तित्व सहज)

सभी परिवेश एवं मध्यांश तृप्त

अणु बंधन, भार बंधन से मुक्त

आशा बंधन से युक्तः– जीने की सहज आशा व आस्वादन अपेक्षा

मात्रात्मक परिवर्तन नहीं, सिर्फ गुणात्मक परिवर्तन

अक्षय बल एवं शक्ति संपन्न

कंपनात्मक गति, वर्तुलात्मक गति से अधिक

जागृत जीवन में 10 क्रियाएँ(5 बल, 5 शक्ति)

मनाकार को साकार करने वाला(सामान्य आकांक्षा–शरीर पोषण, संरक्षण व महत्वाकांक्षा–उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनशीलता) – परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था में प्रमाणित

मनःस्वस्थता (सुख, शांति,संतोष, आनंद)का आशावादी

बलों में संगीतीकरण = मनःस्वस्थता का प्रमाण, स्वरूप

शक्तियों में संगीतीकरण = व्यवहार(जीने) में प्रमाणित होने का सूत्र (परस्परता में)

=नैसर्गिक संतुलन; अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में संतुलन

=मानवीय शिक्षा संस्कार, स्वास्थ्य संयम सहित न्याय, उत्पादन, विनिमय सुलभता

=संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था में संतुलन

जीगृतिपूर्ण जीवन में

(अनुभव–प्रमाण)– आत्मा की स्थिति व गति सह–अस्तित्व के अनुरूप

(बोध–संकल्प)– बुद्धि की स्थिति व गति आत्मा के अनुरूप – आनंद

(चिंतन–चित्रण)– चित्त की स्थिति व गति बुद्धि के अनुरूप – संतोष

(विश्लेषण–तुलन)– वृत्ति की स्थिति व गति चित्त के अनुरूप – शांति

(आस्वादन–चयन)– मन की स्थिति व गति वृत्ति के अनुरूप – सुख

फलस्वरुप जीने में स्वायत्तता= 6 प्रमाण

<u>मानव तथा पूरकता</u>

मानव, जीवन एवं शरीर के संयुक्त रूप में

ज्ञानेन्द्रिय का क्रियाकलाप जीवंतता के आधार पर (जीवन के साथ ही)

कर्मेन्द्रिय का क्रियाकलाप पराधीनता विधि से भी सप्राणित (श्वास व हृदय क्रिया)

प्रकृति = 4 अवस्था, 4 पद

पदार्थ अवस्था का आंशिक तत्व प्राण अवस्था में परिवर्तित (रचना पूर्वक)

प्राण अवस्था का अधिकांश तत्व पदार्थ अवस्था में परिवर्तित (विरचनापूर्वक)

दोनों में आवर्तनशीलता एवं परस्परपूरकता

स्वेदज संसार – भौतिक वस्तु एवं रासायनिक द्रव्य सहज संयोग

मेधस प्रणाली का निर्माण प्रारंभ, समृद्धि की ओर गतिशील

प्राण कोशाएँ निष्प्राण होकर पुनः ऋतु व ऋतुप्रभाव के अनुसार पुनः सप्राणित

समृद्ध मेधस संपन्न शरीर के सामान्य लक्षण – रस, मांस, मज्जा, हड्डी, नस, रक्त, वीर्य

जीवन वंशानुषंगीयता पूर्वक जीवावस्था में प्रमाणित

जीवन संस्कार–अनुषंगीयता पूर्वक ज्ञानावस्था में प्रमाणित। अतः कृत्रिम शरीर रचना से बेहतरीन समाज संभव नहीं

कृत्रिम शरीर रचना= प्राणकोषा, प्राणसूत्र व रचना सूत्र के आधार पर रासायनिक द्रव्यों की उपलब्धता, निश्चित ऊष्मा व दवाबपूर्वक बहुकोषाओं में परिवर्तित

संस्कार एक जीवनगत तथ्य; नियम, न्याय, धर्म, सत्य की प्यास जीवन में

जानना, मानना, पहचानना जीवन में; मानव परंपरा में शरीर के द्वारा(साथ) निर्वाह संपन्न

अतः, मानव परंपरा में प्रमाणित होने के क्रम में, शरीर एक आवश्यकीय माध्यम

ईश्वरवाद से एकांतवाद – भक्ति–विरक्ति – स्वयं के लिए मोक्ष, स्वर्ग; एकांत जैसी कोई स्थिति नहीं, अस्तित्व सह–अस्तित्व पूर्वक है।

देहवाद से भोगवाद – संग्रह – शोषण,द्रोह,विद्रोह,युद्ध की मानसिकता – प्रदूषण, नैसर्गिक असंतुलन; जबकि अपेक्षा :– संतुलन, समृद्धि, समाधान, न्याय

मानव संचेतना = संज्ञानशीलता + संवेदनशीलता

जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना

मानव का संपूर्ण आयाम, दिशा, कोण, परिपेक्ष्य में सार्थकता

मानव संचेतना में पारंगत, निष्णात और प्रमाणित होने के अर्थ में मनोविज्ञान

रहस्यता से मुक्ति = निभ्रमता; जागृति के अभाव में रहस्यता

वर्तमान में रहस्य की वस्तु : आत्मा, ईश्वर, देवी–देवता

अस्तित्व के अध्ययन एवं अवधारणा से ईश्वर संबंधी रहस्य से मुक्ति एवं यथार्थता समझ में आती है। सत्ता = ईश्वर

जीवन ज्ञान पूर्वक आत्मा की समझ; आत्मा जीवन में अविभाज्य क्रियाशील, मध्यस्थ बल व शक्ति संपन्न

मनुष्य ही विकसित होकर मानव, देव मानव, दिव्य मानव; शरीर से अलग होने की स्थिति में यही देवी, देवता

कल्पनाशीलता = अनुरूप, प्रतिरूप, रूप, कुरूप, स्वरूप विधियों से चित्रित करने का कार्यक्रम

कर्मस्वतंत्रता = आवश्यकता, कांक्षा(कल्पित आवश्यकता) के अर्थ में कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमोदित विधि से कार्य करने की स्वतंत्रता

अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन विधि से कल्पनाशीलता व कर्मस्वतंत्रता का आधार–यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता सहज विधि व विज्ञान विवेक सम्मत प्रणाली समाधान पूर्ण पद्धति

यथार्थता = जैसा अर्थ है। अर्थ = स्वभाव

मानवीय स्वभाव = धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करूणा

वास्तविकता = वस्तु जैसे है। वस्तु = विभक्त, अविभक्त

विभक्त= अनन्त इकाई; अविभक्त= सत्ता= मूल ऊर्जा

प्रत्येक एक (इकाई) अपने वातावरण सहित संपूर्ण; स्थिति व गति का अविभाज्य रूप

सत्यता=सत्ता में संपृक्त प्रकृति; अस्तित्व = परम सत्य = स्थिति सत्य

वस्तु–स्थिति सत्य = देश, काल, दिशा, कोण

देश– सत्ता ही परम देश;

दो ध्रवों के बीच दूरी; दो से अधिक ध्रुवों को स्थापित करने से क्षेत्रफल

काल– क्रिया की अवधि;क्रिया व काल का संतुलन ही विभक्त काल ज्ञान की सार्थकता

दिशा– सहअस्तित्व ही दिशा

कोण– प्रत्येक वस्तु में अनन्त कोण

विज्ञान = कालवादी, क्रियावादी, निर्णयवादी ज्ञान

क्रियावादी = इकाई में ऊर्जा/बल संपन्नता का साक्षात्कार

इकाई की क्रियाशीलता निरंतर वर्तमान में प्रमाणित + संपूर्ण प्रकृति सत्ता में संतुलित (निश्चित आचरण+बड़ी व्यवस्था में भागीदारी), नियंत्रित (निश्चित गठन के रूप में होना)

क्रिया= विभक्त प्रकृति का क्रियाकलाप

मानव का संतुलन अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सहज समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व पूर्ण पद्धति, नीति एवं प्रणाली के रूप में

इसे अध्ययनगम्य व व्यवहारगम्य कराने हेतु मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान

निर्णय = परमाणु में नियंत्रण, संतुलन, पूरकता, विकास

रचनाओं में उदात्तीकरण व रासायनिक रचना

विकास/संक्रमण, जीवनीक्रम, जागृति क्रम, जागृति, जीने का कार्यक्रम, व्यवस्था, समाज, जागृति व संचेतना सहित समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व को प्रमाणित करने की शिक्षा परंपरा+आवश्यकीय यंत्रों सहित प्रयोग परंपरा

विवेक = जीवन का अमरत्व(गठनपूर्ण, परावर्तन(पर–निरीक्षण) + प्रत्यावर्तन क्रिया(स्व–निरीक्षण),

5 बल+5 शक्ति), शरीर का नश्वरत्व, व्यवहार सहज नियमों का अध्ययन(समझ) + व्यवहार (जीने) में प्रमाण

चिंतन क्रिया साक्षात्कार विधि से संपन्न

साक्षात्कार की संपूर्ण वस्तु=30 मूल्य

अनुभवमूलक विधि अनुभवगामी पद्धति से बोध

अवधारणाएँ,अध्ययन व अनुसंधान विधि से स्थापित

अनुभव सत्य–बोध कराने में प्रमाणित

संकल्प = पूर्णता के अर्थ में कल्पना को गति देना

कल्पना=इच्छा, विचार, आशा का संयुक्त प्रवाह

कल्पनाएँ सत्य संकल्प के अनुरूप परावर्तित होकर अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था को प्रमाणित

प्रामाणिकता का परावर्तन ही व्यवहार में स्वतंत्रता=स्वयं स्फूर्त विधि से स्वयं में व्यवस्था एवं समग्र व्यवस्था में भागीदारी

जागृतिपूर्णता का परावर्तन =ज्ञानत्रय सहज प्रमाणों को संपूर्ण आयाम, कोण, दिशा, परिप्रेक्ष्य में प्रमाणित करना

जागृतिपूर्णता का प्रत्यावर्तन = जागृति सहज आनंद, अस्तित्व में नित्य अनुभूति, आनंद की निरंतरता

मानवीयतापूर्ण आचरण = सम्यक/परम आचरण; मानव मानवत्व सहित व्यवस्था

मानवीयता= मूल्य, चरित्र, नैतिकता

चरित्र– स्वधन, स्वनारी/स्वपुरूष, दयापूर्ण कार्य–व्यवहार

नैतिकता– तन,मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग व सुरक्षा

मन से ही शरीर का संचालन; जीवन व शरीर के संयुक्त रूप में वर्तमान रहना ही मानव व्यवहार का आधार; ऐसे व्यवहार कार्य के क्रम में उत्पादन भी एक आवश्यकीय कृत्य

उत्पादन = तन, मन सहित प्राकृतिक ऐश्वर्य(शेष प्रकृति) पर श्रम नियोजनपूर्वक उपयोगिता व कला मूल्य की स्थापना; फलस्वरूप सामान्य व महत्वाकांक्षा की वस्तुओं का उत्पादन

निपुणता, कुशलता हेतु प्रशिक्षण; पूर्णतया चित्रण सहज तकनीकी संपन्न मानसिकता

अंग–अवयव के संयोजन पूर्वक हस्तलाघव सहित श्रम नियोजन संपन्न

वर्तमान में भय, प्रलोभन आधारित लाभोन्मादी मानसिकता के साथ उत्पादन

विकल्पः–मूल्य व मूल्यांकन रूपी प्रौद्योगिकी एवं समाज व्यवस्था

इस सूत्र को व्याख्यायित एवं स्थापित करना मनोविज्ञान की अभीप्सा

उत्पादन ही धन; उपयोगिता, सदुपयोगिता व प्रयोजनशीलता विधि से तन, मन, धन का मूल्यांकन

वस्तु का मूल्यांकन उपयोगिता एवं सुंदरता के आधार पर

मन का मूल्यांकन अनुभवमूलक विधि से कार्य–व्यवहार के रूप में

मूल्यांकन का आधार= मानव संबंध व प्राकृतिक संबंध(नैसर्गिक)

मनोविज्ञान सहज संबंध की समझ एक आवश्यकता

मानव–मानव संबंध – प्रधानतः 7 रूपों में

पूर्णता के अर्थ में अनुबंध

पूर्णता– जागृति और उसकी निरंतरता/जागृतिपूर्णता

अनुबंध– अनुक्रमात्मक(अनुस्यूत/निरंतर/वर्तमान/स्थिति–गति/सह–अस्तित्व सहज) विधियों की स्वीकृति/स्वीकृतिपूर्णता व उसकी निरंतरता; परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में प्रमाणित

अतः सभी संबंध व्यवस्था व व्यवस्था में भागीदारी के रूप में सार्थक, मूल्यों के निर्वाह के रूप में प्रमाणित

मूल्य, जीवन सहज बल की अभिव्यक्ति, संप्रेषणा; आधार–अनुभव बल

स्वतंत्रता व स्वराज्य रूपी ध्रुवों के आधार पर अखण्ड समाज व सार्वभौम व्यवस्था, स्वानुशासन(मानवीय आचरण)की मानसिकता व्यवहार में प्रमाणित नहीं शिक्षा में प्रबोधित नहीं

मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान का प्रधान तत्व– संबंधों को जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना

शिशुकाल में माता–पिता(पोषण–संरक्षण)/ममता–उदारतापूर्वक प्रस्तुत; शिशुकाल में ही आहार प्रणाली स्वीकृत

कौमार्य अवस्था में जागृत मानव, जागृति व संबंधों को पहचानने, मूल्यों के निर्वाह करने के अर्थ में अभिभावक प्रेरक

भ्रमित परंपरा में रूढ़ियाँ कौमार्य अवस्था में प्रभावी; सार्वभौमता अपेक्षित, 'करो ना करो' का कार्यक्रम, अगली पीढ़ी में शोधात्मक व विद्रोहात्मक प्रवृत्ति

विज्ञान शिक्षा की समीक्षा – स्मृति, पुस्तकें, विज्ञान विद्वता नहीं है। विज्ञान से सर्वमानव शुभ का कोई अंतिम निष्कर्ष नहीं

मनोविज्ञान = जागृत जीवन क्रियाकलाप का सत्यापन

निर्वाह कार्यकलापों में विविधता जीने की कला के रूप में। संबंधों के मूल आशय में समानता – मानव लक्ष्य, जीवन लक्ष्य, अभ्युदय का प्रमाणित होना

जागृतिपूर्णता = व्यवस्था (मानव लक्ष्य) व व्यवस्था में भागीदारी के रूप में प्रमाण= नित्य विश्वास

संबंध→व्यवस्था→सह–अस्तित्व→अस्तित्व

सभी मूल्य व्यवस्था, व्यवस्था में भागीदारी तथा प्रमाणिकता के रूप में ही प्रमाणित

<u>अनुसंधान और लोकव्यापीकरण</u>

परंपरागत अनुसंधान –

1. रहस्यमयी/मूलक ईश्वर केंद्रित चिंतन प्रणाली – ईश्वरवाद/अध्यात्मवाद – अध्यात्म अतिगहन आदर्श, मौन, निर्विशेष, विरक्तिवादी आचरण

2. अस्थिरता, अनिश्चयतामूलक वस्तु केंद्रित चिंतन – भौतिकवाद/द्वंद्ववाद–यंत्र प्रमाण

3. देवी/देवता/दिव्य पुरूष से सबकुछ होता है – देववाद/अधिदैवीवाद – वांग्मय, उपासना, कर्मकांड

1 और 3 दोनों के अनुसार व्यक्ति स्वार्थी, पापी, अज्ञानी; आस्था (न जानते हुए मानना) विधि; आस्था में विविधता के आधार पर अंतर्विरोध; प्रमाण : शब्द

2 – यंत्रप्रमाण, व्यवहार में प्रमाणित होने में असमर्थ; यांत्रिकता एवं संचेतना के बीच प्रश्न चिह्न

लोकव्यापीकरण – शिक्षा के माध्यम से

अस्तित्वमूलक मानव केंद्रित चिंतन = ज्ञानत्रय का प्रतिपादन अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में व्याख्या, विश्लेषण

सह–अस्तित्व/अस्तित्व, मानव/जीवन, त्व सहित व्यवस्था के रूप में आचरण; इन तीन बिन्दुओं को जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना ही (पूर्ण दर्शन, पूर्ण ज्ञान, पूर्ण आचरण) परम त्रय

वाणी अर्थ संबंध सहज क्रियाकलाप = भाषा आचरण

व्यवहार क्रियाकलाप = संबंध सहज आचरण

व्यवस्था क्रियाकलाप = सर्वतोमुखी समाधान सहज आचरण

जागृत जीवन सहज आचरण = 122; जागृत जीवन में होनेवाली क्रिया, अभिव्यक्ति, संप्रेषणाओं को विश्लेषणपूर्वक इंगित करना

प्रत्येक मनुष्य जीवन रूप में समान (बल–शक्ति, क्रिया, लक्ष्य), रचना

5 आयाम बल और शक्ति के रूप में ; मन–आशा, वृत्ति–विचार, चित्त–इच्छा, बुद्धि–ऋतम्भरा, आत्मा–प्रामाणिकता

मन में 64, वृत्ति में 36, चित्त में 16, बृद्धि में 4, आत्मा में 2 आचरण

भ्रमित मन की क्रियाएँ – मान्यता के आधार पर; मान्यता का आधार – शरीर, इंद्रिय व इंद्रिय संवेदनाएँ; इंद्रिय संवेदनाओं को सत्य मानना/शरीर को जीवन मान लेना – प्रिय, हित, लाभ दृष्टियाँ कार्यरत; इंद्रिय तृप्ति हेतु सोच, कल्पना, चित्रण, प्रयास, प्रयोग

जागृत मन में – नियम पूर्वक इंद्रिय संवेदनाओं का आस्वादन

नियम, न्याय, धर्म, सत्यात्मक वैभव का आस्वादन

अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था का आस्वादन

अस्तित्व में अनुभव का आस्वादन

ज्ञानत्रय के आधार पर मानव संचेतनावादी मानसिकता/मनोविज्ञान स्पष्ट

संचेतना=जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना; इस हेतु अस्तित्व ही संपूर्ण वस्तु है।

मानव परंपरा में ही जागृति प्रमाणित होने की नियति सहज व्यवस्था

नियति= अस्तित्व में नियमपूर्ण स्थिति–गति; हर अवस्था में नियम पूर्ण स्थिति–गति; ज्ञानावस्था में जागृति सहज व्यवस्था

नियम→ न्याय → धर्म → सत्य→ अस्तित्व → नियम; सत्यापित करने वाला – मानव

द्रष्टा– मानव , दृश्य– संपूर्ण अस्तित्व, मानव/जीवन भी अस्तित्व में अविभाज्य

मनोविज्ञान – जागृतिपूर्ण जीवन का अध्ययन और मानव परंपरा में प्रमाणित होने की विधियों से संपन्न

आत्मा की दो क्रिया –

1. अस्तित्व में अनुभव   2. आनन्द सहज प्रमाणिकता

अस्तित्व = सत्ता में संपृक्त प्रकृति – नित्य वर्तमान

आनन्द :– सत्यानुभूत जागृत जीवन में आत्मा, बुद्धि, चित्त, वृत्ति, मन अविभाज्य रूप में कार्यरत

जागृत जीवन सहज सभी क्रियाकलाप व्यवहार में प्रमाणित होने पर्यंत मानव में अध्ययन

अस्तित्व = सह–अस्तित्व = 4 अवस्था, 4 पद; स्थिति–गति; रूप, गुण, स्वभाव, धर्म; विकास–जागृति; रचना–विरचना

समझना = जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना

जानने, मानने की तृप्ति ही अनुभव; पहचानना, निर्वाह करना जानने, मानने के उपरांत सहज क्रिया

जानने, मानने की वस्तु प्रधानतः स्वभाव, धर्म और स्थिति

सत्ता– अखण्ड, व्यापक, पारदर्शी, पारगामी(साम्य ऊर्जा), अविभक्त, तरंग–दवाबविहीन, स्थितिपूर्ण

प्रकृति– परस्पर प्रतिबिम्बन, ऊर्जासंपन्न, विभक्त, भौतिक, रासायनिक, जीवन क्रिया, स्थितिशील

मनुष्य ही समझने व प्रमाणित करनेवाली इकाई

अनुभव, बोध जीवन सहज प्रक्रिया; अध्ययन, प्रमाण मानव सहज प्रक्रिया

बोध सहज क्रिया अध्ययनपूर्वक जागृत मानव परंपरा में सुलभ; सत्यबोध प्रतिष्ठा के उपरांत अनुभवमूलक बोध होना एक सहज प्रक्रिया

बोध की वस्तु – यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता संपन्न सह–अस्तित्व; अनुभवमूलक अभिव्यक्ति, संप्रेषणा ही अध्ययन हेतु वस्तु; सत्यबोध सहज तथ्यों का उद्‌घाटन अनुभवमूलक विधि से संपन्न = सह–अस्तित्व

सत्य ही बोधगम्य, फलतः अनुभवगम्य; बोध में आत्मा का अनुभव साक्षी निहित; अनुभव के साक्षी में ही अध्ययनपूर्ण

पूर्ण अनुभव = सर्वतोमुखी समाधान रूप में प्रसवित, संप्रेषित, अभिव्यक्त

अनुभव प्रभाव, जीवन सहज संपूर्ण क्रिया में प्रभावित; जीवन शक्ति और बल अनुभव प्रभाव में अभिभूत(तृप्त)

अनुभव आत्मा में , जागृतिमूलक विधि से जीना=5 शक्तिमय विधियों से जीने

यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता = स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य के रूप में जागृत जीवन मानसिकता में अक्षुण्ण

जीवन ज्ञान=परम ज्ञान, अस्तित्व दर्शन=परम दर्शन, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान=परम आचरण

अनुभव – प्रमाणिकता –प्रमाण –अभिव्यक्ति –संप्रेषणा –प्रकाशन –कार्य व्यवहार – अभ्युदय –निःश्रेयस –अनुभव

अध्ययन सहज सार्थकता = अवधारणा/समझदारी/जानना–मानना

प्रामाणिकता सहज गति अनुभव बल का ही परावर्तन

सत्य त्रय को जानना, मानना, अनुभव करना – अस्तित्व दर्शन सूत्र

भाषा त्रय को जानना, मानना, अनुभव करना – मानवीयतापूर्ण संप्रेषणा सूत्र

वास्तविकता, यथार्थता, सत्यता पूर्ण विधि से कायिक, वाचिक,मानसिक व कृत, कारित, अनुमोदित कार्यक्रमों को परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था और प्रामाणिकता व स्वानुशासन रूपी कार्यक्रमों में जानना, मानना, अनुभव करना – जागृत मानव परंपरा सूत्र

निपुणता, कुशलता, पांडित्यपूर्ण शिक्षा संस्कार सहजता को अनुभव करना – मानवीय शिक्षा सूत्र

जीवन सहज क्रियाकलापों को जानना, मानना, अनुभव करना – जीवन विद्या सूत्र

मानवीयतापूर्ण व्यवहार + स्वायत्तता(4)को जानना, मानना, अनुभव करना – व्यवहार सूत्र

4 आयामों में सामरस्यता विधि को जानना, मानना, अनुभव करना – मानव परिवार सूत्र

मानवीयतापूर्ण संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था में सामरस्यता; परिवार से विश्व परिवार तक को जानना, मानना और अनुभव करना = सार्वभौम व्यवस्था सूत्र

समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व सहज अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था को जानना, मानना और अनुभव करना = मानव परंपरा सूत्र

नियम त्रय को जानना, मानना और अनुभव करना = जागृत मानव मानस सूत्र

मानव से दिव्य मानव, जागृतिपूर्ण होने के तथ्य को जानना, मानना और अनुभव करना = मानव व्यवहार सूत्र

मात्रा का उपयोग, गुणों का सदुपयोग, स्वभाव, धर्म के मूल्यांकन में जागृति सहज प्रयोजनों को जानना, मानना और अनुभव करना =मानव व्यवहार सूत्र

न्याय, धर्म, सत्य पूर्ण दृष्टि व विधियों को जानना, मानना, अनुभव करना और पहचानना, निर्वाह करना = मानव व्यवहार सूत्र

व्यवहार, व्यवसाय, विचार व अनुभव में सामरस्यता सूत्र 6 स्वभाव पूर्ण व्यवहार व्यवस्था को जानना, मानना और अनुभव करना = जागृत परंपरा सहज मानव व्यवहार सूत्र

मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि, आत्मा की सामरस्यता को जानना, मानना और अनुभव करना = जीवन जागृति सूत्र

आशा, विचार, इच्छा, संकल्प व अनुभव में सामरस्यता को जानना, मानना और अनुभव करना = जागृति सूत्र

संबंधों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन को जानना, मानना और अनुभव करना =व्यवहार सहज सूत्र

विज्ञान व विवेक में सामरस्यता सहज वांगमय को प्रस्तुत करना, प्रमाणित रहने की विधियों को जानना, मानना और अनुभव करना = जागृत परंपरा सूत्र

प्रतिभा और व्यक्तित्व में सामरस्यता सूत्र को जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना = समझदारी सहज सूत्र का प्रमाण

तन, मन, धन रूपी अर्थ का सदुपयोग, सुरक्षात्मक तथ्यों को समाधानपूर्वक जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना = समझदार सुखी परिवार सूत्र

परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन सहित संबंधों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, परिवार सहज रूप में अपनाए गये उत्पादन कार्य में परस्परपूरक होने के तथ्य को जानना, मानना,अनुभव करना, पहचानना, निर्वाह करना =सुख, सुंदर, समाधानपूर्ण परिवार व विश्व परिवार सूत्र

नित्य वर्तमान सहज अस्तित्व में संपूर्ण भावों को जानना, मानना, अनुभव करना = जीवन जागृति सूत्र

प्रत्येक एक में रूप, गुण, स्वभाव, धर्म की सामरस्यता को जानना, मानना, अनुभव करना = सह–अस्तित्व सहज जागृति सूत्र

प्रबुद्धता, संप्रभुता, प्रभुसत्ता सहज क्रियाकलापों के मूल में ज्ञानत्रय सहज सत्य को जानना, मानना,अनुभव करना, पहचानना, निर्वाह करना =समाधान मूलक व्यवस्था जीवन जागृति व अभ्युदय सूत्र

न्याय मूलक व्यवहार, आवर्तनशील उत्पादन कार्यक्रम सहज तथ्यों को जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना = जागृत मानव परंपरा सूत्र

मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान सहज व्यवहारवादी अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था रूपी तथ्यों को जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना = अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था सूत्र

समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व = सर्वमानव सहज शुभाकांक्षा

इसे सफल, सार्थक व लोकव्यापीकरण हेतु 'मनोविज्ञान' मानव में, से, के लिए अर्पित

बुद्धि सहज चार क्रियाएँ

1. आनंद – अंतर्विहीन/नित्य उत्सव क्रिया = अनुभवमूलक विधि से बुद्धि पर प्रमाणिकता का पूर्ण प्रभाव ही आनंद; दृढ़ता का द्योतक; जागृति सहज स्थिति और गति की स्वीकृति क्रिया परमता; जानने–मानने की तृप्ति
2. धी – उत्सवशीलता का परावर्तन हेतु तत्परता

अवधारणा – अनुभवमूलक प्रमाण; न्याय धर्म ,सत्य की समझ, जानने–मानने की तृप्ति सहित स्वीकृतियाँ,

अवधारणा की वस्तु – संपूर्ण रूप, गुण, स्वभाव, धर्म, स्थिति, गति; 4 अवस्थाओं का सहज स्वभाव, धर्म; अस्तित्व ही सह–अस्तित्व के रूप में अवधारणा में होता है।

आत्मा को जानने, मानने का क्रियाकलाप बुद्धि में; बुद्धि को प्रमाणित करने का क्रियाकलाप आत्मा सहज रूप में मूल्यांकन संपन्न; बुद्धि में संपन्न आनंद,धी, अस्तित्व, धृति (रूप, गुण, स्वभाव, धर्म, स्थिति, गति) का साक्षात्कार चित्त में

इनमें रूप और गुण का चित्रण चित्त में, इकाई के रूप, गुण व स्वभाव, धर्म की अविभाज्यता चित्त में प्रमाणित

स्वभाव = मौलिकता, मूल्य; उदाहरण–विश्वास; चिंतन क्रियाकलाप में पहचानने के रूप में साक्षात्कार

चिंतन, बोध और अनुभव समझने के अर्थ में; संपूर्ण चिंतन देश, दिशा, काल मुक्त

अध्ययन विधि से आनन्द और धी की सार्थकता बोध सुलभ

3. अस्तित्व :– स्थिति–गति, विकास–जागृति और वर्तमान सहज स्वीकृति, अध्ययनमूलक विधि से प्राप्त ज्ञान (जाना, माना, स्वीकारा गया)

4. धृति :– सह–अस्तित्व सहज सत्य–बोध सहज परावर्तन में निष्ठा, प्रवृत्ति

अध्ययन = अधिष्ठान सहज, अनुभव के साक्षी में स्मरण पूर्वक की गई क्रिया–प्रक्रिया व प्रयास

अध्ययन हेतु कल्पनाशीलता प्रधान वस्तु;

आशा, विचार, इच्छा रूपी शक्तियों का प्रभावन कार्य के आधार पर शरीर जीवंत

जानने, मानने की संतुलन स्थिति = बोध, तृप्ति बिन्दु = अनुभव

अनुभवमूलक बोध आनंद में सपूर्ण सह–अस्तित्व स्पष्ट

अनुभव, प्रमाणिकता सहित आनंद, धी सहज स्वीकृति के आधार पर अस्तित्व बोध और धृति क्रियाकलाप सुदृढ़ रूप में कार्यरत

अनुभवमूलक सत्यता सहज चिंतन–चित्रण और तुलन–विश्लेषण समेत मूल्य, चरित्र, नैतिकतापूर्ण आस्वादन–चयन क्रियाकलाप= जागृत मानव परंपरा में सार्थक क्रियाकलाप

ज्ञानत्रय सहज अध्ययन विधि से जानने, मानने की क्रिया बुद्धि में संपन्न, साथ ही जीवन का द्रष्टा पद साक्षी के रूप में नियोजित; फलतः आनंद, धी, अस्तित्व बोध और धृति का स्वीकृति अनुभव, प्रमाण हेतु स्वरित, गतित

अध्ययन की संपूर्ण वस्तु– अस्तित्व, सह–अस्तित्व (विकास, संक्रमण, जीवन पद), जीवनी क्रम, जागृति क्रम, जागृति, रासायनिक–भौतिक रचना–विरचना; उपलब्धि – बोध

अध्ययन विधि से अस्तित्व बोध के अनंतर अनुभव पूर्वक पूर्णता और उसकी निरंतरता की आवश्यकता और प्रयोजन–बोध प्रमाणित

अनुभवमूलक विधि से धृतिपूर्वक मानवीयतापूर्ण आचरण प्रमाणित, व्यवस्था में समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व प्रमाणित

संकल्प सहज रूप में संपूर्णता, सार्थकता के रूप में;

संपूर्ण प्रवृत्तियाँ समाधान सूत्रित, नियंत्रित एवं स्वयं स्फूर्त विधि से व्यवहार में प्रमाणित

यही सुख, सौंदर्य, समाधान की अविभाज्य अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन

चित्त की चिंतन–चित्रण रूपी 16 क्रियाकलाप

1. श्रुति – यथार्थ जीवन व दर्शन पूर्ण अभिव्यक्ति; सह–अस्तित्व सहज यथार्थों का भाषा सहज अभिव्यक्ति, संप्रेषणा
2. स्मृति – आवश्यकतानुसार भाषापूर्वक जानकारी का प्रस्तुतीकरण/भाषा से इंगित वस्तु का साक्षात्कार सहित चित्रण समेत की गई स्वीकृति; बार–बार दुहराना ही प्रमाण

मनव में ही श्रुति–स्मृतिपूर्वक प्रकाशन जिससे भास–आभास–प्रतीति पूर्वक अनुभव

ध्वनि की पहचान पदार्थ अवस्था(परमाणु) में भी

ध्वनि व कार्य संकेतों की पहचान प्राण–कोषा में भी

शब्द, ध्वनि और नाद की पहचान जीवों में भी

शब्द, ध्वनि, नाद व भाषा; परस्पर वस्तुओं को इंगित करने के अर्थ में जानना, मानना, पहचानना

भाषा= जिससे वस्तु सहज सत्य भास हो जाए

श्रुति = सत्य–त्रय को इंगित, बोध करने के लिए सुनने, सुनाने योग्य संभाषण

परिभाषा – पूर्णता को इंगित करने, कराने के अर्थ में; पूर्णता =पूर्णता त्रय, रासायनिक–भौतिक रचनाएँ अपने–अपने वातावरण सहित संपूर्ण

संपूर्ण श्रुति प्रत्येक एक अपने त्व सहित व्यवस्था को बनाए रखने हेतु उद्गतशील

संपूर्ण वांगमय/श्रुति यथार्थता/मौलिकता को इंगित, चिन्हित, निर्देशित करने के रूप में सार्थक

यथार्थता/मौलिकता= रूप, गुण, स्वभाव, धर्म

1. पदार्थ अवस्था में रूप– आकार, आयतन, धन; गुण–सम, विषम, मध्यस्थ; स्वभाव– संगठन, विघटन; धर्म – अस्तित्व
2. प्राण अवस्था में रूप– आकार, आयतन, धन; गुण– सम, विषम, मध्यस्थ; स्वभाव– सारक, मारक; धर्म– अस्तित्व सहज पुष्टि

3. जीव अवस्था में रूप– आकार, आयतन, धन; गुण– सम, विषम, मध्यस्थ; स्वभाव– क्रूर, अक्रूर; धर्म– अस्तित्व सहज पुष्टि सहित आशा
4. ज्ञान अवस्था में रूप– आकार, आयतन, धन; गुण–सम, विषम, मध्यस्थ; स्वभाव– धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करूणा; धर्म– अस्तित्व सहज पुष्टि सहित आशा, सुख

स्वभाव, धर्म ही प्रत्येक अवस्था की मौलिक पहचान

पदार्थ अवस्था में रूप, प्राण अवस्था में रूप, गुण; जीव अवस्था में रूप, गुण, स्वभाव; ज्ञान अवस्था में रूप, गुण, स्वभाव, धर्म प्रधान पहचान ही सार्वभौम

शब्द – वाक्य – सूत्र – गद्य, पद्य, प्रबंध, निबंध

मानव भाषा कारण, गुण, गणित के अविभाज्य रूप में; जिससे परम सत्य रूपी सह–अस्तित्व भास–आभास पूर्वक प्रतीति सहज बोध; फलतः अनुभव

भाषा अपने गति में – व्यापार, यांत्रिक, व्यवसाय, व्यवस्थात्मक, राजनैतिक, दार्शनिक, शास्त्रीय, साहित्य, सांकेतिक भाषा

सह–अस्तित्व एक ध्रुव, धारकता–वाहकता एक ध्रुव, मानव–जीवन प्रयोजन एक ध्रुव; संदर्भानुसार किन्हीं दो ध्रुवों के संयोजित रूप में मध्यस्थ दर्शन सह–अस्तित्ववाद की प्रस्तुति

भाषा मर्यादा के साथ व्यवहार, व्यवस्था और मूल्यांकन मर्यादाओं को सार्थकता के अर्थ में प्रायोजित करने का उद्‌देश्य समाहित

मानव सहज परंपरा= मानवत्व सहित परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था, स्वानुशासन

सुनने–सुनाने का प्रधान उद्‌देश्य = जागृति= स्वायत्त मानव, परिवार से विश्व परिवार तक व्यवस्था में भागीदारी, स्वानुशासन को पहचानना, निर्वाह करना

जीवन का स्वत्व = समझदारी; ईमानदारी– पहचानना, निर्वाह करने के रूप में प्रमाणित, जिम्मेदारी व्यवस्था व व्यवस्था में भागीदारी संबंध

जागृत जीवन में प्रिय, हित, लाभ की दृष्टि न्याय, धर्म, सत्य की दृष्टि से नियंत्रित

प्रिय – व्यवहार, लोक न्याय के साथ संयत

हित – संयम के साथ संयत

लाभ – उत्पादन, विनिमय न्याय के साथ, समृद्धिपूर्वक संयत

संप्रेषणा = श्रुति = सार्थक कर्म–स्वतंत्रता रूपी स्वानुशासन और सार्थक कल्पनाशीलता रूपी स्वराज्य सहज संप्रेषणा, अभिव्यक्ति= अभ्युदय सहज सार्थकता को बोध कराने हेतु

जीवन प्रमाणित करने हेतु जागृति; जागृति हेतु सह–अस्तित्व परस्परता में संप्रेषित होना आवश्यक

परंपरा की संपूर्णता = आचरण, शिक्षा, संविधान, व्यवस्था

इस हेतु जागृतिपूर्वक जीने की विधि, कला, उपक्रम, उपाय, शोध कार्यों को अपनाना आवश्यक

सह–अस्तित्व सहज परम सत्य को संप्रेषित, अभिव्यक्त करने योग्य श्रुति को पहचानना आवश्यक

सह–अस्तित्व वादी श्रुति संयोजनपूर्वक अध्ययन विधि से हर नर–नारी में बोध सुलभ

सार्थक विचार शैली की जिज्ञासा के अनुपात में प्रभावी

व्यवस्था व व्यवस्था में भागीदारी हेतु समस्त भाषा= श्रुति= सत्य, धर्म, न्याय, नियम को भाषा पूर्वक व्यक्त करना= निर्भ्रमवादी संपूर्ण भाषा= मूल्य, मूल्यांकन; संबंध की पहचान, मूल्यों का निर्वाह; अर्थ का सदुपयोग व सुरक्षा; उत्पादन और विनिमय; जागृति, प्रमाणिकता, सर्वतोमुखी समाधान, स्वानुशासन हेतु समस्त भाषा= अस्तित्व, सह–अस्तित्व, विकास, जीवन–जागृति, रचना–विरचना व इनके अंतर्संबंध व प्रयोजनों को जानने, मानने हेतु समस्त भाषा

श्रुति सहज सार्थकता= अस्तित्व सहज सह–अस्तित्व बोध

जीवन सहज जागृति बोध

त्व सहित व्यवस्था सहज अभिव्यक्ति और अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सहज तथ्यों का बोध

प्रत्येक एक रूप, गुण,स्वभाव, धर्म सहित अविभाज्यता सहज तथ्यों का बोध

संविधान में मानवीयतापूर्ण आचरण सहज पहचान हेतु श्रुतिः

1. समझदारी श्रुति–स्मृति पूर्वक पीढ़ी दर पीढ़ी संप्रेषित, बोध पर्यंत श्रुति
   मानव की संपूर्णता = भाषा, भाव, भंगिमा, मुद्रा, अंगहार
2. परिवार में परस्पर समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी की पहचान
3. आहार, विहार, विचार, प्रकृति व्यवस्था सूत्र के अर्थ में प्रयोजित
4. संबंध, मूल्य, मूल्यांकन, उभय तृप्ति
5. कर्तव्य, दायित्व, प्रवृत्ति, उत्पादन–कार्य में परस्पर पहचान
6. तन, मन,धन रूपी अर्थ का सदुपयोग, सुरक्षा के आधार पर परस्पर पहचान; सुख, शांति, संतोष का मूल्यांकन
7. स्वास्थ्य–संयम; शिक्षा–संस्कार प्रयोजन–प्रयोग प्रमाण
8. परस्परता में न्याय सहज निर्णयों की स्वीकृति एवं परस्पर आचरण में प्रमाणित करने के अर्थ में
9. समाधान–समृद्धि(व्यक्तित्व का मूल्यांकन) के फलस्वरूप उपकार कार्य में प्रवृत्त(व्यवस्था में भागीदारी का मूल्यांकन)
10. नैसर्गिक संबंध की पहचान एवं इस हेतु सार्थक, संतुलित, नियंत्रित, समाधानित होने हेतु
11. परिवार समूह की प्रकृति, प्रणाली,नीति व निर्णयों का मानव लक्ष्य के अर्थ में स्मृति, श्रुति पूर्वक मूल्यांकन
12. हर स्तर पर स्वयं की स्थिति एवं अपने से बड़ी व्यवस्था की स्थिति–गति का स्मृति–श्रुति पूर्वक मूल्यांकन; विलोम विधि से श्रुतिपूर्वक मूल्यांकन

100 परिवार व्यवस्था के रूप में साकार होने की स्थिति में व्यवस्था साकार/सुलभ

व्यवस्था के विशद अध्ययन हेतु विवेक सम्मत विज्ञान व विज्ञान सम्मत विवेक विधि से तीनों वाद अर्पित; इसी क्रम में तीनों शास्त्र

श्रुति का मूल रूप= सत्य = नित्य वर्तमान = अस्तित्व

संपूर्ण आयाम, दिशा, कोण, परिप्रेक्ष्य, काल, देश, स्थिति व गतियों में सामरस्यता को बनाए रखने हेतु श्रुति, स्मृति, बोध, अनुभव आवश्यक

श्रुति को पहचानने/सत्य समझ में आने के उपरांत आवश्यकतानुसार बारंबार संप्रेषित, प्रकाशित व अभिव्यक्त करने हेतु प्रकाशोदय क्रिया ही स्मृति

अनुभवमूलक विधि से संपूर्ण संप्रेषणा कार्य (शिक्षा, संस्कार, संबंध–मूल्य–मूल्यांकन, व्यवस्था–व्यवस्था में भागीदारी) प्रधानतः स्मृति को वैभव

प्रत्येक परिस्थिति में नियमों का अनुभवमूलक संप्रेषणा ही श्रुति

उसे समय–समय पर आवश्यकीय परिप्रेक्ष्यों में प्रयोजनशील बना लेना ही जीने की कला

न्याय अनुभवमूलक स्मृति सहित श्रुति; संबंधों में मूल्यों का निर्वाह व मूल्यांकन करना जीने की कला

सर्वतोमुखी समाधान(व्यवस्था व व्यवस्था में भागीदारी) स्मृति सहित श्रुति; निर्वाह में सफल बना लेना ही जीने की कला

सत्य में अनुभव, उसकी निरंतरता, उसकी अभिव्यक्ति, संप्रेषणा; उसे विभिन्न विधा, आयाम, कोण व दिशाओं(जीने की कला) में सार्थक बना लेना ही श्रुति–स्मृति का वैभव

सह–अस्तित्व में अनुभव मूलक विधि से संपूर्ण स्मृतियों का श्रुतिमूलक होना ही मानव परंपरा का नित्य शुभ

3. मेधा :– स्मृति में धारक–वाहक/कला को साक्षात्कार करनेवाली चिंतन क्रिया; न्याय, धर्म, सत्य को स्वीकार करने वाली क्रिया; विज्ञान व विवेक सम्मत साक्षात्कार सहित स्वीकार सहज क्रिया; समझदारी की पुष्टि में है ऐसा चिन्हित करना; लक्ष्य, दिशा, सार्थकता का निर्धारण
4. कला :– उपयोगिता व कला की संयुक्ति उपलब्धि व योग्यता

विवेक :– प्रयोजनों को जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना = पूर्णता व संपूर्णता के साक्षात्कार सहित न्याय, धर्म, सत्य के आधार पर संपूर्ण प्रयोजनों को पहचानने की क्रिया(निर्वाह करने की मूल प्रकृति)

प्रयोजन–सूत्र= जीवन का अमरत्व, शरीर का नश्वरत्व, व्यवहार के नियम की साक्षात्कारपूर्वक स्वीकृति ही विवेक

विज्ञान :– काल, क्रिया, निर्णय सहज स्वीकृति को प्रमाणित करने की विधियाँ; प्रक्रिया–विश्लेषणात्मक(भाग–विभाग से रचित रचनाओं के रूप में पहचानने की क्रिया)

विवेक पूर्वक :– अस्तित्व स्थिर है, विकास व जागृति निश्चित है।

सत्य सहज प्रयोजन को पोषण, संरक्षण करने हेतु गति(दूरसंचार कला आदि) की आवश्कता

वस्तुओं का परिवार में उपयोग, समाज में सदुपयोग, व्यवस्था में प्रयोजनशील

शुभाकांक्षाएँ जीवन सहज कल्पना में, प्रमाण परंपरा में ज्ञानत्रय पूर्वक, लोकव्यापीकरण हेतु – मानवीय/जागृत शिक्षा–संस्कार

अध्ययन हेतु जड़ –चैतन्य प्रकृति

व्यवस्था का मूल रूप परमाणु; चैतन्य परमाणु का लक्ष्य–जागृति

व्यवस्था, निश्चयता, स्थिरता सहज विधियों के आधार पर विज्ञान–समाज व जागृति हेतु पूरक

दूरसंचार– सार्थक उपलब्धि

निरर्थक उपलब्धि – बीज गुणन, नस्ल सुधार, कृत्रिम खाद, कीटनाशक, खनिज तेल व कोयला प्रयोग, युद्ध सामग्री

विवेक व विज्ञान मे सामरस्यता की सर्वतोमुखी समाधान व न्याय सुलभता का सहज स्रोत

विवेक व विज्ञान का लोकव्यापीकरण व व्यवहार में प्रमाणित होना ही अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन का प्रयोजन

निःश्रेयस = भ्रम मुक्ति; अभ्युदय ही सर्वतोमुखी समाधान; सार्वभौम व्यवस्था के रूप में व्यवहारान्वित; मानवीय शिक्षा संस्कार पूर्वक लोकव्यापीकरण

कला – सार्वभौमता, अखण्डता के लोकव्यापीकरण का कियाकलाप

मानवीय आचरण पूर्वक परिवार व्यवस्था से विश्व परिवार व्यवस्था में भागीदारी

ऐसी कला का लोकव्यापीकरण करना ही कला का तात्पर्य

5. कांति – प्रकाश/जीवन–प्रकाश; जीवन का प्रभाव क्षेत्र, मूल्यांकन कम ही जीवन–प्रकाश की कांति है।
6. रूप – आकार, आयतन, धन

अस्तित्व ही रूप, हर रूप प्रकाशमान

व्यापक असीमित, प्रकृति सीमित रूप में

मनुष्य जितनी विशालता तक निर्भ्रम है, वहाँ तक परावर्तन का प्रभाव

अनुभव में जीवन–प्रकाश में अस्तित्व ही संपूर्ण वस्तु रूप है।

जीवन जागृति की महिमा ही जीवन प्रकाश, व्यापक व अनन्त अस्तित्व ही दृश्य

अनुभवमूलक बोध, चिंतन पूर्वक क्यों, कैसा, कैसे, कितना का उत्तर स्पष्ट

कैसा – व्यापक में संपृक्त प्रकृति 4 अवस्थाओं के रूप में, जीवन ही इंद्रियों का द्रष्टा

जीवन अपने जीने की आशा सहज प्रभाव से मेधस को प्रभावित; संकेतों के रूप में प्रभाव ज्ञानेन्द्रिय द्वारा कार्यशील, प्रवर्तनशील

मेधस के द्वारा ज्ञानवाही विधि से संपूर्ण शरीर में जीवंतता का प्रभाव क्षेत्र बना रहता है।

जागृतिपूर्वक जीवन अपने द्रष्टा पद का प्रयोग करता हुआ, अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन करता हुआ ज्ञानेन्द्रिय एवं कर्मेन्द्रिय का द्रष्टा; यही शरीर के साथ संज्ञानशीलता

इच्छानुसार इंद्रिय कार्य करना ही इंद्रिय व्यापार

हर एक का प्रभाव–क्षेत्र उससे अधिक। जीवन 5 शक्तियों के रूप मे अपना प्रभाव क्षेत्र बनाए रखता है।

अस्तित्व में भौतिक, रासायनिक एवं जीवन क्रियाकलाप

पारदर्शिता व पारगामियता– व्यापक सहज कांति/महिमा

व्यापक कार्य–व्यवहार क्षेत्र, कल्पना क्षेत्र, अनुभव क्षेत्र से अधिक; गणितीय भाषा में समाहित नहीं– कितना

हर वस्तु विद्यमान(अपने स्वरूप में सीमित रहना), गतिमान, प्रकाशमान(ससम्मुखता में प्रतिबिम्बित रहना)

अस्तित्व = स्थिति= होना; हर वस्तु स्थिति–गति के रूप में अविभाज्य व स्थिति–गति सहित ही प्रतिबिम्बित

परस्परता में पहचानना, निर्वाह करना प्रकाशमानता का वैभव

हर परमाणु अंश, परमाणु, अणु, अणु–रचित पिंड प्रकाशमान

मृदा, पाषाण, मणि, धातु परस्पर सहवास विधि से(एक–दूसरे को पहचानते हुए) व्यवस्था में भागीदारी

रासायनिक ऊर्मि= रासायनिक क्रियाकलाप में प्रवृत्ति

हर रचना एक व्यवस्था को प्रकाशित करता है। हर विरचना दूसरी रचना के लिए सूत्र

कांति विधि से ही परस्पर पहचान

मानव परंपरा में तीनों अवस्थाओं की प्रकाशमानता का अनुभव व्यवस्थात्मक सौंदर्य, प्राकृतिक छटा के रूप में

कांति= छवि= स्वसौंदर्य को ससम्मुखता में प्रतिबिंबित करने के अर्थ में सार्थक

व्यवस्थात्मक कांति, सौंदर्य, प्रभाव को जागृत मानव ही मूल्यांकित कर पाता है; मूल्यांकन पूर्वक सुख

कांति का प्रयोजन हर रूप, अवस्था, पद के साथ मूल्यांकित

रूप व कांति अविभाज्य, व्यवस्था के रूप में वैभव

सह–अस्तित्व प्रयोजन है; त्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी अक्षुण्ण

7. निरीक्षण – अनुभवमूलक दर्शन व उसके प्रकटन की संयुक्त चिंतन–चित्रण क्रिया
8. गुण – सम–विषम(सापेक्ष), मध्यस्थ(स्वभाव गति की निरंतरता) गति
   स्वभाव गति= व्यवस्था व व्यवस्था में भागीदारी रूपी गति

इच्छाएँ– रूचि, मूल्य, लक्ष्य मूलक प्रणाली से प्रकाशित

इच्छाएँ ईक्षण सहित छवि की महिमा के अर्थ में मानव के क्रियाकलापों में सार्थक/चरितार्थ

भ्रमित अवस्था में जीने की आशा, आस्वादन–अपेक्षा के आधार पर सम्मोहन व आवेशपूर्वक इंद्रिय सन्निकर्ष में तद्‌रूप

बेहोशी में सुख पाने की स्वीकृति के अर्थ में स्वयं की विस्मृति स्वीकृत – यही पशुवत जीने का आधार व प्रवृत्ति

जागृति पूर्वक जीवन इंद्रिय सन्निकर्ष का द्रष्टा; न्याय, धर्म, सत्य पूर्वक इनका उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजन प्रमाणित

व्यवस्था ही वर्तमान में विश्वास का आधार; व्यवस्था सह–अस्तित्व सहज; मूल्य व लक्ष्य मूलक विधि ही व्यवस्था का आधार

कार्य(समृद्धि), व्यवहार(वर्तमान में विश्वास), अखण्ड समाज में भागीदारी(मानवीयतापूर्ण आचरण), सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी(सर्वतोमुखी समाधान) को प्रमाणित करना नित्य समीचीन। यही मानव सहज निरीक्षण

9. संतोष – संकल्प व चित्रण तथा चिंतन की पूर्ण सामरस्यता
   चित्त में होने वाली संतुष्टि; सभी विधाओं में समृद्धि, उसकी अभिव्यक्ति तथा यशस्वी होने का स्रोत; सर्वतोमुखी समाधान व उसकी निरंतरता, अभिव्यक्ति
   व्यवस्था में भागीदारी से अधिक आचरण, आचरण से अधिक विचार, विचार सहज आवश्यकता से अधिक समझ= समृद्धि
10. श्री– समृद्धि की निरंतरता की स्वीकृति; श्री संपन्न= यशस्वी(स्वतंत्रता व स्वराज्य में प्रमाणित होना) होना

चिंतन, जीवन सहज प्रयोजनों को प्रतिपादित व मूल्यांकित करने की क्रिया; अवधारणा का (अनुभव क्रम में)चित्त में साक्षात्कार= नित्य भाव/सर्वभाव की सहज सुलभता

संतोष सहज अभिव्यक्ति= लक्ष्यमूलक प्रणाली में प्रवर्तित रहना

समझ, विचार, लक्ष्य, निर्णय, कार्य, दिशा के विधाओं में समृद्धि

न्याय(मानव व नैसर्गिक संबंध) प्रमाणित होना ही यश का प्रारंभिक रूप

मानव न्याय– मूल्य–मूल्यांकन; नैसर्गिक न्याय– संतुलन, नियंत्रण, नियम

सर्वतोमुखी समाधान क्रम में मानवीयतापूर्ण संस्कृति–सभ्यता; फलतः मानव लक्ष्य प्रमाणित

मानव सहज संतुष्टि :– कल्पनाशीलता व कर्मस्वतंत्रता की तृप्ति

कल्पनाशीलता की तृप्ति= स्वराज्य= परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था

कर्मस्वतंत्रता की तृप्ति= स्वतंत्रता= प्रामाणिकता की अभिव्यक्ति

जागृत जीवन सहज अभिव्यक्ति, संप्रेषणा = अनुभव, बल, विचारशैली, जीने की कला के रूप में प्रमाणित

यश, श्री के रूप में जीवन संतुष्टि ही संतोष के रूप में वैभवित

11. प्रेम = दया, कृपा, करूणा की संयुक्त अभिव्यक्ति, पूर्णानुभूति=पूर्ण मूल्य
12. अनन्यता= जागृतिपूर्णता की पहचान, प्रामाणिकता व समाधान की निरंतरता, संबंधों में पूरक क्रियाकलाप=प्रधान शिष्टता

    प्रेममयता=विवेक संपन्नता, अभयता का अनुभव

    प्रेमानुभूति स्वतंत्रता स्वानुशासन के रूप में प्रमाणित

    प्रत्येक मनुष्य अपने से विकसित के साथ अनन्यता को स्थापित करता है।

    मानवीयतापूर्ण जीवन में अनुभव में आने वाला स्थापित मूल्यः विश्वास–श्रद्धा–प्रेम(गुणात्मक विकास)

    स्थापित मूल्यानुभूति क्रमः ममता, स्नेह, विश्वास, कृतज्ञता, वात्सल्य, सम्मान, गौरव, श्रद्धा, प्रेम

    अनुभव = क्रमपूर्वक प्राप्तोत्पत्ति; क्रमानुभूति= मूल्यत्रय(स्थापित, शिष्ट, व्यवसाय व कला)

    व्यवसाय–शिष्ट–स्थापित(वरीय)

    प्रेमानुभूति के अनन्तर ही वास्तविकताएँ स्पष्ट; परम आनंद

    =और कुछ पाना शेष नहीं है।

    गुणात्मक परिवर्तन के लिए ही दायित्व व कर्तव्य प्रमाणित। अनुभव क्षमता से संपन्न होने पर्यंत दायित्व व कर्तव्य बोध का मूल्यांकन; अनन्तर वह स्वभावगत

    अमानवीयता से मानवीयता– नियंत्रण पूर्वक दायित्व व कर्तव्य प्रमाणित

    अतिमानवीयता– 6 स्वभाव पूर्वक दायित्व व कर्तव्य प्रमाणित

    व्यक्तित्व व प्रतिभा की चरमोत्कर्षता में ही प्रेमानुभूति; यह यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता सहज प्रमाण; प्रेम अतिव्याप्ति, अनाव्याप्ति व अव्याप्ति के दोष से मुक्त

    मनुष्य ही प्रेमी एवं प्रेमास्पद होने योग्य; शिष्टतापूर्वक अनन्यता के रूप में आचरण में इंगित

इंगित होना= व्यंजना= समझना–समझाना= भास, आभास, प्रतीति, अवधारणा, अनुभूति

प्रेमानुभूति पूर्वक हर मानव स्वयंस्फूर्त विधि से भाव, भंगिमा, मुद्रा, अंगहार, कार्य–व्यवहार, निश्चय तथा निरंतरता सहित प्रकट

स्वायत्त, स्वतंत्र, समृद्ध, समाधानित रहते हुए दया, कृपा, करूणा का धारक–वाहक, प्रेमी पद में प्रतिष्ठित, सर्वाधिक प्रयोजनकारी

प्रेमी के लिए हर मानव प्रेमास्पद, प्राकृतिक संतुलन हेतु भी जीवन शक्तियों का नियोजन

प्रेममयता हेतु समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी पूर्वक प्रमाणित होना। इसे स्वयं में निरीक्षण, परीक्षण करना ही नित्य, निरंतर, सार्थक अभ्यास

प्रेम= सुख, शांति, संतोष, आनंद का नित्य स्वरूप= जागृतिपूर्णता= आचरणपूर्णता

स्थापित मूल्यानुभूति क्षमता का सर्वसुलभ होना ही लोकमंगल कार्यक्रम; प्रेममयता का प्रत्यक्ष रूप– मूल्य, चरित्र, नैतिकतापूर्वक जीना, मानव लक्ष्य में भागीदारी

मानव संचेतनापूर्ण व्यवहाराभ्यास सहज परिपूर्णता में ही प्रेमानुभूति

प्रेमानुभूति योग्य क्षमता संपन्न होने हेतु शुचिता(शारीरिक स्वस्थता व शिष्टता का योगफल) एवं गुणात्मक परिवर्तन में अनुशीलन(प्रमाण परंपरा में अनुगमन) अनिवार्य साधना

चारों आयाम की पूर्ण जागृति ही अभ्युदय; इस हेतु धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक कार्यक्रम

प्रेमानुभूति योग्य जनमानस का निर्माण करने हेतु मानवीय शिक्षा संस्कार अति महत्वपूर्ण

शिक्षा ही जीवन में गुणात्मक परिवर्तन का स्रोत, चरितार्थ होने का आधार, अनुभव हेतु प्रेरणा

प्रेमानुभूति– पूर्णतया सामाजिक व व्यवहारिक

जागृत परंपरा को स्थापित, प्रस्थापित, गतित, सार्थक करना ही व्यक्ति, समाज, संस्था, राज्य, राष्ट्र, शिक्षा का लक्ष्य/कर्तव्य

ऐसे कर्तव्य को पहचानने हेतु ज्ञानत्रय(समझदारी) आवश्यक

प्रेममय अभिव्यक्ति= समझदारी का लोकव्यापीकरण

13. वात्सल्य– अभ्युदय के अर्थ में पोषण, संरक्षण की निरंतरता; भावी पीढ़ी को जागृत करने में निश्चयन के साथ उत्सवित रहने का उद्‌गार

14. सहजता – स्पष्टता और प्रामाणिकता

वत्स(संतान) का अर्थ बोध होने पर वात्सल्य भाव, इस हेतु संबंध में तन, मन, धन रूपी अर्थ का नियोजन

संबंध में निष्ठा= दायित्व व कर्तव्यों को स्वीकारने की स्थिरता

वात्सल्य सहज संबंधों का निर्वाह प्रामाणिकता के आधार पर सफल

बच्चों में जागृति ही प्रधान लक्ष्य, दायित्वः बड़े–बुजुर्ग, आचार्य, अभिभावक(पिछली पीढ़ी/परंपरा)

इस हेतु परंपरा का सभी आयाम में जागृत होना आवश्यक; मानवीय आचरण, व्यवहार व व्यवस्था की निरंतरता आवश्यक

परम सरलता/सहजता :–संबंध में मुद्रा, भंगिमा, अंगहार, भाषा, भाव सहित अर्थ का सदुपयोग, सुरक्षा पूर्वक प्रस्तुति

शिष्य की जागृति हेतु गुरू, आचार्य की प्रामाणिकता आवश्यक

परम सत्य= सह–अस्तित्व

न्याय= संबंध, मूल्य, मूल्यांकन, उभय तृप्ति, संतुलन

समाधान= व्यवस्था में भागीदारी

समझदारी का मूल तत्व= ज्ञान त्रय

अखण्ड समाज= मानव जाति एक

सार्वभौम व्यवस्था= मानवीयतापूर्ण व्यवस्था

मानवीयतापूर्ण शिक्षा–संस्कार= संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था की एकरूपता

मानव लक्ष्य= समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व

लक्ष्य पूर्ति हेतु दिशा= व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी

स्थापित व शिष्ट मूल्य को आचरण में पाने हेतु परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था आवश्यक

जागृत परंपरा हेतु जागृत मानव, परिवार, अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था को पहचानना आवश्यक

नियति सहज क्रिया प्रणाली, पद्धति, लक्ष्य और दिशा, प्रयोजन और सार्थकता सहज यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता में जागृत रहने व जागृत करने के क्रम में ही वात्सल्य व सहजता सार्थकता

15.श्रद्धा :– आचरणपूर्णता(श्रेय/जागृति और प्रमाणिकता/मुक्तिपद) की ओर गुणात्मक परिवर्तन(गति) व उसकी निरंतरता

16.पूज्यता– गुणात्मक विकास व जागृति हेतु सक्रियता

समझदारी का व्यवहार(चरितार्थ) रूप– अभ्युदय; विस्तार रूप– अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था; अभ्युदय प्रतिष्ठा/श्रेय पद ही पूज्य

समझदार, जागृत व प्रमाणित मानव के सानिध्य में पूज्यतापूर्वक जिज्ञासा सहित प्रस्तुति क्रम में प्रेरणा(सूत्र, व्याख्या, प्रेरणा, लक्ष्य व दिशा निर्देशन) को पाकर निर्मित चिंतन प्रधान गति ही श्रद्धा; श्रेय हेतु प्राप्त दिशा, दर्शन, लक्ष्य सहज स्पष्टता और स्वीकारपूर्वक ही प्रेरक के प्रति पूज्यता

मानवीयतापूर्ण परंपरा में श्रेय नित्य समीचीन; क्योंकि जागृत मानव प्रामाणिकता पूर्वक वर्तमान व औरों को जागृत करने में तत्पर

अस्तित्व में जागृतिपूर्ण मानव के प्रति पूज्यता सहज; मनुष्येतर प्रकृति(नैसर्गिकता) के साथ परस्पर पूरक, जो परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था पूर्वक सफल

धरती का सौंदर्य/उत्सव– ऋतु संतुलन; आधार= खनिज व वनस्पति का संतुलन

आवर्तनशीलता एक आवश्यक प्रणाली व ऊपरी सतह की वस्तुओं का सामान्य व महत्वाकांक्षा के अर्थ में उपयोग, सदुपयोग

परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था विश्व परिवार के रूप में जागृत होने के उपरांत ही सार्थक, सुलभ; इसे एक ग्राम/मोहल्ले में प्रमाणित करना ही शुभारंभ

मानव का लक्ष्य:– जीवन जागृति– स्वयं व्यवस्था व व्यवस्था में भागीदार– सामाजिक होना

अखण्ड समाज में भागीदारी का निर्वाह– मानव लक्ष्य प्रमाणित करना, सार्वभौम व्यवस्था प्रमाणित करना

इस हेतु शिक्षा–संस्कार व स्वास्थ्य–संयम ही नित्य स्रोत

शिक्षा–संस्कार पूर्वक बच्चे में लक्ष्य व दिशा निर्धारित व स्वीकृत; तत्पश्चात जागृत, प्रमाणित– यही परंपरा है।

संयम =जागृत जीवन संतुलन; जीवन संतुलन के आधार पर श्रेय व पूज्यता सहज

स्वास्थ्य:–जागृति को प्रमाणित करने योग्य शरीर

वृत्ति :–

मन में 64 आचरण; 32 परावर्तन, 32 प्रत्यावर्तन। ये सभी मानव सहज स्वीकृत आचरण;

मन जीवन की एक अविभाज्य क्रिया

वृत्ति में तुलन–विश्लेषणः हर क्रिया–प्रक्रिया को लक्ष्य के अर्थ में निर्धारित करना व फल–परिणाम के प्रति जागृत रहना

18 प्रकार से क्रियाकलाप= 36 आचरण

1. विद्या – जो जैसा है, उसे वैसा ही विधिवत जानने, मानने स्वीकार करने की क्रिया; जीवन जागृति उसकी निरंतरता
2. प्रज्ञा – परिष्कृतिपूर्ण संचेतना; जीवन जागृति को अभिव्यक्त करना
   वस्तुगत व वस्तुस्थिति सत्य के प्रति अवधारणा एवं अनुभवमूलक गति
   स्थिति सत्य में बोध व अनुभवमूलक गति

मध्यस्थ दर्शन :– मनुष्य और अस्तित्व को वर्तमान में प्रमाणित होने हेतु साक्षात्कार पूर्वक प्रयोजन के अर्थ में प्रक्रिया स्पष्ट करने की धारा

समझने की वस्तु(ज्ञेय)= सह–अस्तित्व= अस्तित्व और मानव= दृश्य= सत्ता में संपृक्त प्रकृति= अस्तित्व कैसा है?

समझनेवाला (ज्ञाता)= जीवन= द्रष्टा

ज्ञान= सह–अस्तित्व में अनुभूत होना= दर्शन

विद्या= समझदारी; केंद्र बिन्दु जीवन

जागृत जीवन प्रकाश ही न्याय, धर्म, सत्य दृष्टि के रूप में क्रियाशील

मनुष्य द्रष्टा पद प्रतिष्ठा में देश, काल, दिशा को सहज ही पहचानने व निर्वाह करने योग्य

सत्ता/विस्तार/दूरी ही देश; रचना और इकाइयों की परस्परता में दिशा, काल= क्रिया की अवधि; क्रिया की निरंतरता

मनुष्येतर प्रकृति– नियम, नियंत्रण, संतुलन पूर्वक पहचानना, निर्वाह करना

मानव – जानने, मानने के साथ पहचानना, निर्वाह करना

प्रज्ञा की सार्थक अभिव्यक्ति= प्रयोजन सम्मत विश्लेषण

विद्वता की अभिव्यक्ति = मानव, परिवार, समाज, व्यवस्था, शिक्षा–संस्कार, संविधान, संस्कृति, सभ्यता, जीव, वनस्पति, पदार्थ, ग्रह–गोल, सह–अस्तित्व, इनका प्रयोजन सम्मत विश्लेषण व विश्लेषण सम्मत प्रयोजन को जानना, मानना; इसे संप्रेषित करना, पहचानना, निर्वाह करना प्रज्ञा

3. कीर्ति :– विकास व जागृति के संदर्भ में श्रेष्ठता की प्रमाणिक प्रस्तुति; जीवन तृप्ति का प्रमाण
4. वस्तु(विचार) – वास्तविकता को प्रमाणित करनेवाली इकाई और सत्ता

   अनुभव व प्रमाणों को तर्क संगत प्रणाली से संबद्ध और स्पष्ट करना; मानवीयतापूर्ण जीने की कला के लिए आवश्यकीय मानसिकता से संपन्न होना

   विज्ञान– विकास–नियम(पूरकता के रूप में), व्यवहार प्रमाण; वर्तमान में ह्रास–नियम, यंत्र प्रमाण

   समाज न्याय(सुख), सार्वभौम व्यवस्था (समाधान), स्वानुशासन(प्रामाणिकता) संपन्न विधि से मानव परंपरा का वैभवित होना ही जागृतिपूर्वक कीर्ति संपन्न होना

   संक्रमण अतिसूक्ष्मतम काल खण्ड में घटित; अवधि को गिनना संभव नहीं
5. निश्चय – लक्ष्य, दिशा, प्रयोजन की ओर गति; सत्यतापूर्ण विचार की निरंतरता; मानव लक्ष्य के प्रति विश्वास
6. धैर्य – न्यायपूर्ण विचार में निष्ठा व उसकी निरंतरता

   मानव में निश्चय – स्वयं के प्रति विश्वास, श्रेष्ठता के प्रति सम्मान; प्रमाण में स्वायत्त मानव

   धैर्य संपन्न होने हेतु मानवीयता को परंपरा के चारों आयाम में पहचानने की आवश्यकता

मनवीयता का कार्य–व्यवहार रूप= ऐषणात्रय(वृत्ति) + स्वतंत्रता, स्वानुशासन(निवृत्ति)

मनुष्य के सभी कायिक, वाचिक क्रियाकलाप के मूल में जीवन शक्तियाँ/मानसिक शक्तियाँ

अभी समुदाय चेतनापूर्वक विषय, संग्रह, सुविधा, भोग में ग्रसित; शासन की मानसिकता

जबकि अस्तित्व= सह–अस्तित्व= पूरक विधि, सार्वभौम व्यवस्था

स्वराज्य व्यवस्था का गति रूप= न्याय, उत्पादन, विनिमय, सुलभता

निश्चय और धैर्य = जीवन रूप में जागृति

परिवार की निश्चयता संबंधों में निहित है एवं उसके निर्वाह में धैर्य प्रमाणित

अस्तित्व में धैर्य, निश्चय़= अस्तित्व नित्य वर्तमान, विकास की निश्चयता

व्यवस्था व व्यवस्था में भागीदारी हेतु विश्वास आवश्यक

7. शांति – इच्छा और विचार की सामरस्यता; समाधानपूर्ण विचार की स्थिति= स्वभाव गति
8. दया – पात्रता के अनुरूप वस्तु/योग्यता प्रदायी क्षमता

शांति निरंतर उत्साह, उल्लास, न्याय व समाधान का स्रोत

मानव शांति व उत्सवपूर्वक दयापूर्ण कार्य–व्यवहार करने में समर्थ; शांतिपूर्वक ही दया प्रमाणित

दयापूर्ण कार्य–व्यवहार

–विकासक्रम और जागृति सहज यथास्थिति को बनाए रखना/जीने देकर जीना

–अविकसित के विकास में सहायक होना

संबंध को पहचानने पर सेवा, अर्पण, समर्पण(दया) की उमंग शांतिपूर्ण मानसिकता में उद्‌गमित।

बच्चा शांति पाने हेतु किसी परिवार, शिक्षा, राज्य व धर्म संस्था में स्वयं को अर्पित

9. कृपा – योग्यता/वस्तु के अनुरूप पात्रता उपलब्ध करानेवाली क्षमता
10. करूणा– पात्रता और योग्यता, वस्तु उपलब्ध कराने में सहायक होना– परम जागृति की अभिव्यक्ति

मनुष्य जागृतिपूर्वक ही संतुलित, नियंत्रित, नियमित और न्याय, धर्म, सत्यपूर्वक प्रमाणित; शेष प्रकृति अपनी–अपनी अनुषंगीयतापूर्वक नियंत्रित

नैसर्गिक संबंध = जलवायु, धरती, हरयाली, अनंत ग्रह–गोल, नक्षत्र

मानव की मौलिकता

–कर्मस्वतंत्रता, कल्पनाशीलता

–मनाकार को साकार करनेवाला, मनःस्वस्थता का आशावादी

–जागृतिपूर्वक अपने स्वत्व,स्वतंत्रता, अधिकार को परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था और अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था के रूप में प्रमाणित

दया, कृपा, करूणापूर्ण स्वभाव की सर्वसुलभता हेतु जागृत परंपरा आवश्यक, जिसके लिए जागृतिपूर्ण मानव सतत प्रयासरत

11.दम :– ह्रास की ओर आसक्ति का समापन; भ्रम, भय, अपव्यतता से मुक्ति; स्वभाव गति प्रतिष्ठापूर्वक आवेशों के संदर्भ व प्रभाव से मुक्ति

12.क्षमा :– विकास के लिए सहायता करते समय ह्रास पक्ष से अप्रभावित रहना

पदार्थ अवस्था में परस्परता में आवेश शांत, प्राण अवस्था में आवेश नहीं;

भ्रमित मानव में सर्वाधिक स्मृतियाँ आवेश अत्याचार के रूप में क्रियाशील; मानवीयता ही मानव की स्वभाव गति

दम और क्षमा के फलस्वरूप आवेश की पीड़ा किंचित भी शेष नहीं

अव्यवस्था/अन्याय/गलतियों का व्यवस्था/न्याय/सर्वतोमुखी समाधान में विलय

विलय= अभाव के स्थान पर भाव होना; अभाव एक भ्रम

13.तत्परता :– जागृति, जागृतिक्रम, विकासक्रम में सक्रियता; मानवीय व्यवहार, आचरण, उत्पादन, व्यवस्था में भागीदारी में निष्ठा

14.उत्साह :–(जागृति व परंपरा में निष्ठा)उत्थान हेतु साहस; जीवन प्रयोजन(अभ्युदय, निःश्रेयस) के अर्थ में किया गया संकल्प सहित गति

जागृति और उसकी निरंतरता को प्रमाणित करना

तत् = अभ्युदय, निःश्रेयस

जागृति की अभिव्यक्ति में सर्वतोमुखी समाधान प्रमाणित

प्रमाणिकता की अभिव्यक्ति स्वानुशासन के रूप में

15. कृतज्ञता :– (विकास व जागृति) उन्नति की प्राप्ति में सहायता की स्वीकृति(स्वीकारना, स्मरण में रखना, अभिव्यक्त करना)

आजीविका, स्वास्थ्य, विद्या, समाधान, प्रामाणिकता, प्रमाण सुलभता में, से, के लिए जो भी सहायता मिली उसके प्रति कृतज्ञ होना

16. सौम्यता :– स्वभाव गति प्रतिष्ठा/शिष्टता/स्वेच्छा से स्वयं का नियंत्रण

समाधान पूर्वक सुख और शांति का अनुभव; जीवन तृप्ति = प्रमाणिकता +समाधान संपन्नता

संपूर्ण शिक्षा और लोक शिक्षा, शिष्टता के अर्थ में सार्थक

अध्ययनपूर्वक विकास व जागृति का लोकव्यापीकरण

अध्ययन की मूल वस्तु= मध्यस्थ दर्शन; इसके आधार पर सह–अस्तित्ववाद= विचार शैली= विवेक सम्मत विज्ञान+विज्ञान सम्मत विवेक

व्यवहारवादी जनचेतना

जीवन ज्ञान + अस्तित्व दर्शन

जीवन जागृति को प्रमाणित करने के क्रम में शरीर यात्रा एक साधन

जीवन ज्ञान के आधार पर मानवीयता की पहचान; फलतः अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदार

मानवीयता

–संबंधों में निहित मूल्यों का निर्वाह

–पोषण, संरक्षण और समाज गति हेतु आवश्यकीय वस्तु व उपकरणों का उत्पादन, उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनशील

17. गौरव :– सार्थकता की स्वीकृतियाँ; निर्विरोधपूर्वक अंगीकार किये गए अनुकरण

18. सरलता :– स्वभाव गति संपन्न शरीर विन्यास; ग्रंथि व तनाव रहित अंगहार

अभ्युदय के अर्थ में प्रमाणित होना ही अभिव्यक्ति

हर इकाई स्वयं में व्यवस्था एवं समग्र व्यवस्था में भागीदार

प्रयोजनीयता = जीवन जागृति सहज स्वानुशासन के अर्थ में प्रयोग

समझदारी का प्रमाण= कर्तव्य और दायित्व का निर्वाह

भ्रमित मनुष्य में भी प्रमाण व प्रामाणिकता की अपेक्षा का होना ही जागृत होने का सूत्र

विकसित, जागृत मनुष्य मूल्यों का निर्वाह करते हुए मूल्यांकन पूर्वक श्रेष्ठता का गौरव पाता व करता है।

गौरव मूल्य, मूल्यांकन, उभय तृप्ति के अर्थ में प्रतिपादन, अभिव्यक्ति व संप्रेषणा है। ऐसी अभिव्यक्ति व संप्रेषणा सरलतापूर्वक

मानव देव मानव का, देव मानव दिव्य मानव का सम्मान

दिव्य मानव, दिव्य, देव मानव का मूल्यांकन; देव मानव, देव मानव, मानव का मूल्यांकन; मानव, मानव का मूल्यांकन

इस प्रकार परस्पर सम्मान करना व पाना सहज; उपयोगिता, सदुपयोगिता, प्रयोजनीयता के आधार पर मूल्यांकन

19. विश्वास – समाधान की अभिव्यक्ति, संप्रेषणा; परस्परता में मूल्य निर्वाह

20. सौजन्यता – पूरकता विधि से विश्वास सहज प्रमाण मानव व नैसर्गिक परस्परता में

सहकारिता, सहभागिता, सहयोगिता, पूरकता

मानवीय लक्ष्य, विचार, व्यवहार, कार्य मानसिकता से अनुप्राणित प्रस्तुति, सेवा, अर्पण, समर्पण, जिज्ञासा, स्वीकृतियाँ

स्वयं में विश्वासपूर्वक सौजन्यता की अभिव्यक्ति

स्वयं में विश्वास समझदारीपूर्वक प्रमाणित = वर्तमान में व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी, अखण्ड समाज में भागीदारी और उसका मूल्यांकन क्रियाकलाप

समझने की वस्तु : मानव जीवन व शरीर के सह–अस्तित्व रूप में अस्तित्व में अविभाज्य; जीवन व शरीर सहज प्रयोजन

मनुष्य यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता के साथ ही व्यवस्था व व्यवस्था में भागीदार

समीक्षा :– रहस्य मूलक ईश्वर/देवता केंद्रित चिंतन का प्रमाण नहीं, परस्पर अंतर्विरोध, सामान्य भौतिकवादी की तरह जीना

अस्तित्वमूलक मानव केंद्रित चिंतन के द्वारा निर्धारण के आधार बिन्दु

अस्तित्व स्थिर, विकास निश्चित; स्थिति(बल)–गति(शक्ति) अविभाज्य; सत्ता में संपृक्त जड़ और चैतन्य प्रकृति, 4 अवस्था; सह–अस्तित्व, विकास क्रम, विकास, जागृतिक्रम, जागृति

जागृतिपूर्णता ही लक्ष्य; जागृति का अवसर सहज सुलभ होने हेतु अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था आवश्यक; मानव मानवत्व सहित व्यवस्था, जागृतिपूर्वक प्रमाणित

संस्कृति = आवास, अलंकार, उत्सव, सम्मिलित उत्सव, मानवीयता का प्रकाशन, प्रदर्शन और प्रचार

जीने की कला = संबंध की पहचान, मूल्यों का निर्वाह + व्यवस्था सहज 5 आयाम में भागीदारी

अनुभव बल, विचार शैली, जीने की कला के योगफल में मानव प्रमाणित

आचरण, व्यवहार व व्यवस्था, जागृति सहित मानव के संपूर्ण होने का साक्ष्य = सर्वतोमुखी समाधान + प्रमाणिकता

21. सत्य– तीनों कालों में एक सा भासमान, विद्यमान, अनुभवगम्य; सत्यत्रय– नित्य वर्तमान= सह–अस्तित्व

22. धर्म– धारणा, जिससे जिसका विलगीकरण न हो; विकास व जागृति सहज अभिव्यक्ति

वर्तमान अपने में स्थिति, गति, स्पंदन, आशा और आनंद की अभिव्यक्ति; अस्तित्व में सभी अवस्था व पद अपने में परंपरा; अस्तित्व सहज विविधता को निर्देशित, इंगित करने हेतु नामकरण, भाषा; हर इकाई स्थिति–गति के रूप में अविभाज्य; त्व सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी

जीवन अपने कार्य–गति पथ सहित एक आकार;आशानुरूप कार्य गति पथ

ज्ञानेन्द्रिय का कार्यकलाप जीवंततापूर्वक संपन्न; कर्मेन्द्रिय का आरंभिक क्रियाकलाप(सामान्य लक्षण) प्राणावस्था में भी संपन्न

जानने–मानने की प्रधान वस्तु :– परम सत्य रूपी सह–अस्तित्व + धर्म

धर्म– त्व सहित व्यवस्था + समग्र व्यवस्था में भागीदार

'मानव जाति एक' के आधार पर संबंध की पहचान, मूल्यों का निर्वाह ही अखण्ड समाज का आधार

मानव धर्म = सर्वतोमुखी समाधान(अभ्युदय) का प्रमाण परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था

मानवता ही मानव धर्म; सत्य में अनुभव का प्रमाण ही स्वानुशासन

23.न्याय(सौजन्यता)– संबंधों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, उभय तृप्ति

24.संवेदना – मानवीयता के पोषण, संवर्द्धन व मूल्यांकन के लिए संपादित क्रियाकलाप

पूर्णता के अर्थ में वेगित होना;

नियम त्रय सहित किया गया कार्य, व्यवहार, विचार;

जाने हुए को मानने व पहचाने हुए को निर्वाह करने हेतु स्वयं स्फूर्त प्रक्रिया;

ज्ञानेन्द्रिय को प्रमाणित करने के क्रम में संवेगित करना

परस्परता =संबंध; संबंध में पूरकता

प्राणावस्था–नियंत्रण; जीवावस्था– संतुलन

न्याय और सौजन्यता ही पहचानना तथा निर्वाह करने की क्रिया; क्योंकि इसका मूल्यांकन होता है।

जागृत मानव सहज अभिव्यक्ति, संप्रेषणा= मानवीयतापूर्ण आचरण= नैसर्गिक, समाज, व्यवस्था न्याय

धरती और उसके वातावरण को नियमित, नियंत्रित, संतुलित रहने देकर जीने की कला, न्याय के लोकव्यापीकरण हेतु अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था और मानवीयतापूर्ण आचरण ही प्रमाण

25.तादात्मता :– नित्यता के अर्थ में स्वीकार सहित किया गया निर्णय

26.साहस :– सहनशीलता समेत प्रसन्नता सहित किया गया व्यवहार क्रियाकलाप

जागृति के अनन्तर निश्चय वहन क्रिया के रूप में; वहन क्रिया क्षमता का द्योतक; प्रकाशन और संप्रेषणा योग्यता के अर्थ में

प्रकाशन संपूर्णता के अर्थ में जाना, माना जाता है।

स्वयं में से के लिए नित्यता स्वीकृत क्योंकि जीवन नित्य वस्तु(परिणाम से मुक्त)

तादात्मता एकता का द्योतक, जीवन एक गठनपूर्ण परमाणु, शक्ति, बल, लक्ष्य में समानता की स्वीकृति

एकरूपता स्वीकृति सहित कार्य व्यवहार को निश्चित कर पाना जागृति की महिमा

मानव सहज परस्परता में जीवन सहज एकरूपता ही तादात्मता का आधार

प्रसन्नता= न्याय, समाधान, समृद्धि संगत

न्याय, समाधान= जीवन सहज सुख, शांति, संतोष

समृद्धि= शरीर, पोषण, संरक्षण, समाज गति के अर्थ में सार्थक

सह–अस्तित्व में नित्य समाधान, नित्य संबंध, निरंतर न्याय को सार्थक रूप देते रहना ही साहसिकता

हर मानव सुखी होने के अर्थ में ही सह–अस्तित्व में तादात्मता और साहस को प्रमाणित

मानव की सभी दिशा, कोण, आयाम, परिप्रेक्ष्य, देश, काल में अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन मानव लक्ष्य और जीवन लक्ष्य के अर्थ में

27. संयम :– मानवीयतापूर्ण विचार, व्यवहार व व्यवसाय में नियंत्रण

28. नियम :– नियंत्रणपूर्वक स्वयंस्फूर्त ढंग से व्यवस्था में जीते हुए समग्र व्यवस्था में भागीदारी की प्रवृत्ति व प्रमाण

संयम, नियम, नियंत्रण, संतुलन व जागृतिपूर्वक दायित्व और कर्तव्य निर्वाह; ये प्रक्रियाएँ ही नियम। यह शुभ, सुंदर, समाधान सहज स्फुरण

मानवीयतापूर्ण आचरण= मूल्य, चरित्र, नैतिकता

मूल्य– जीवन, मानव, स्थापित, शिष्ट, वस्तु

मानव मूल्य– धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करूणा

चरित्र– स्वधन, स्वनारी/स्वपुरूष, दयापूर्ण व्यवहार कार्य

नैतिकता– तन,मन,धन रूपी अर्थ का सदुपयोग व सुरक्षा

निपुणता, कुशलतापूर्वक वस्तु मूल्य स्थापित; पांडित्यपूर्वक उपयोग, सदुपयोग, प्रयोजनशील

सदुपयोग– पोषण, संरक्षण, समाज गति के अर्थ में अर्पण–समर्पण

जागृत मानसिकता पूर्वक ही तन और धन का सदुपयोग, सुरक्षा संभव

पदार्थ अवस्था का नियमित रहना ही उसकी स्वभाव गति

प्राण अवस्था का नियमित, नियंत्रित रहना ही उसकी स्वभाव गति

जीव अवस्था का नियमित, नियंत्रित, संतुलित रहना ही उसकी स्वभाव गति

ज्ञान अवस्था का नियमित, नियंत्रित, संतुलित, जागृत(न्याय,धर्म,सत्य) रहना ही उसकी स्वभाव गति

जागृत मानव

व्यवसाय में नियमित

आचरण में नियंत्रित

विचार में संतुलित व समाधानित

अनुभव में जागृत

व्यवहार में प्रमाणित

समग्र व्यवस्था में भागीदार

स्वानुशासन के रूप में जागृति का संपूर्ण प्रमाण

29. वीरता– अपने में न्यायपूर्ण आचरण, व्यवहार, व्यवस्था में भागीदारी, उसकी निरंतरता+न्याय के लोकव्यापीकरण में सक्रियता; दूसरों को न्याय दिलाने में स्वशक्तियों का नियोजन

30. धीरता– न्याय के प्रति निष्ठा, दृढता

लोक न्याय का आधार–मानवीयता; मनुष्य जन्म से ही न्याय का याचक

जीवन, जीवन कार्य, प्रवृत्ति, विचार, विश्लेषण, संज्ञानशीलता, जीवन और मानव प्रयोजन को स्पष्ट करना ही मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान का प्रधान लक्ष्य

मानव की मौलिकता= संबंध(मानव और नैसर्गिक) में 6 दृष्टि सहज अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन

समझ– नैसर्गिक संतुलन, शरीर और जीवन संतुलन, परिवार संतुलन, अखण्ड समाज संतुलन, सार्वभौम व्यवस्था संतुलन

पहचानने का सर्वाधिक भाग मूल्यांकन; मूल्यांकन का सर्वाधिक भाग संतुलन(सार्वभौम लक्ष्य)

समझ= ज्ञानत्रय; समझ के अनुरूप विचार, विश्लेषण और योजना= ईमानदारी

संबंध में प्रयोजन का निर्वाह ही परिवार संतुलन का आधार = समाधान, समृद्धि का प्रमाण

हर परिवार में 3 संबंध– माता–पिता, भाई–बहन, पति–पत्नी

धीरता, वीरता पूर्वक नैसर्गिक संतुलन, अखण्ड समाज संतुलन, व्यवस्था संतुलन

समझदारी पूर्वक :– समाधानकारी, न्यायकारी, प्रयोजनकारी निर्णय; स्वायत्त मानव, उपकार प्रवृत्ति

उपकार= समझा हुआ को समझाना, सीखा हुआ को सिखाना, किया हुआ को कराना

धीरता, वीरता पूर्वक उपकार कार्य; समझकर सीखना एक सार्वभौम सिद्धांत

परिवार में समाधान, समृद्धि वैभवित व मूल्यांकित

विश्व परिवार(समाज) में समाधान, समृद्धि, अभय वैभवित व मूल्यांकित

विश्व मानव व्यवस्था में समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व वैभवित व मूल्यांकित

परिवार में धीरता, वीरता, उदारता

विश्व परिवार(समाज) में धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करूणा

31. भाव= मौलिकता= मूल्य; कार्य रूप त्व सहित व्यवस्था

32. संवेग= संयोग(पूर्णता के अर्थ में योग) से प्राप्त वेग(भावों को जीने की कला में सार्थक बनाने योग्य प्रायोजित मानसिकता)=मानवीयतापूर्ण भावों के अनुरूप प्रवर्तन(परावर्तन, प्रत्यावर्तन) की मानसिकता

मानवीयता= मानव का स्वभाव= मानव भाव

मानवीयतापूर्ण प्रवर्तन :– कार्य, व्यवहार, विचार, उत्पादन, विनिमय, उपयोग, अपेक्षा, व्यवस्था, व्यवस्था में भागीदारी

'त्व' भाव है, प्रकाशन संवेग है।

गति से वातावरण में तरंग, स्वयं में कंपन

प्रकृति 4 अवस्था, 4 पद में – परस्परपूरक; त्व सहित व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदार

सह–अस्तित्व रूपी अस्तित्व ही संपूर्ण भाव; जागृत शिक्षा सहज अध्ययन से संपूर्ण भाव विदित

स्वभाव + धर्म= भाव; गुण= गति= संवेग

मूल्य, व्यवस्था= भाव

रूप व गुण– उपयोगी; स्वभाव व धर्म– प्रयोजनीय

भाव = व्यवस्था, व्यवहार, आचरण, उत्पादन, उपभोग, सदुपयोग, सुरक्षा, अस्तित्व, सह–अस्तित्व, विकास, जीवन, जागृति और रासायनिक भौतिक रचना–विरचना

33.जाति – रूप, गुण, स्वभाव, धर्म की विविधता; हर अवस्था में अनेक जाति, प्रजाति; मौलिकता ही जाति और समुदाय का आधार; जागृति पूर्वक मानव जाति एक; त्व सहित व्यवस्था

34.काल – क्रिया की अवधि

जातियों का दर्शक मानव

परिवार ही व्यवस्था का आधार; नियम, नियंत्रण, संतुलन व न्याय प्रमाणित

स्वस्थ मानस = निपुणता, कुशलता, पांडित्य

निपुणता कार्य में; कुशलता व्यवहार में;पांडित्य ज्ञान, विज्ञान, विवेक सम्मत सूझ–बूझ तैयार करने और तदनुसार प्रमाणित होने में

काल= नित्य वर्तमान; आवर्तन/परिणाम क्रम में काल गणना

क्रिया की निरंतरता, कालखंड की सीमा में क्रिया,मानव व्याख्यायित नहीं

संयोग–वियोग, फल–परिणाम, परिवर्तन घटनाओं का काल और संख्या क्रम में गणना हेतु काल

मानव ही काल का द्रष्टा = क्रिया, क्रिया की अवधि, घटना, परिणाम, स्थिति, गति, अनंत, व्यापक का द्रष्टा

परिणाम, परिवर्तन, रचना, विरचना के रूप में कालखण्ड की गणना

वर्तमान निरंतर अक्षुण्ण; कल्पनाशीलता का प्रयोग करने के उपरांत ही वर्तमान की समझ

सत्ता का व्यापक होना स्थिरता का, सत्ता में संपृक्त प्रकृति की विविधता सहित जागृति रूप में, विकास में निश्चयता का प्रमाण नित्य वर्तमान; अस्तित्व, अस्तित्व में भाव नित्य वर्तमान; सत्ता व्यापक, इकाईयाँ अनंत

35.तुष्टि :– पूर्णता की निरंतरता ही जीवन सहज तुष्टि, समझदारी पूर्वक स्वायत्त होकर परिवार मानव के रूप में जीना और अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करना ही निरंतर तुष्टि

36.पुष्टि :– मानव परंपरा के रूप में लोकव्यापीकरण होना ही पुष्टि

प्राणकोषा में स्पंदनशीलता का साक्षी = श्वसन क्रिया

परस्पर योग–संयोग पूर्वक उत्सवित, तरंगित होना=ऊर्मि; शरीर एक व्यवस्था

जीवन संतुष्टि का प्रथम चरण :– संबंधों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह–परिवार में

द्वितीय चरण :– विश्वास की अभिव्यक्ति = अखण्ड समाज

संबंधों को पहचानने के क्रम में ही संस्कार सफल

कल्पनाशीलता का संतुष्टि – परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था

न्याय–सुलभता – कर्तव्य और दायित्व पूर्वक संबंध में अपेक्षित मूल्यों का निर्वाह

उत्पादन–सुलभता – सदुपयोग, सुरक्षा विधि से आवर्तनशील प्रक्रिया सहित

शरीर पोषण, संरक्षण, समाज गति के अर्थ में उत्पादन

विनिमय सुलभता– लाभ–हानि मुक्त विनिमय–कोष सुलभता

परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था की अक्षुण्णता हेतु शिक्षा संस्कार और स्वास्थ्य संयम

मानवीय शिक्षा संस्कार = चारों अवस्थाओं का अध्ययन

स्वास्थ्य–संयम :– मानव संचेतना प्रकाशित होने योग्य शरीर व्यवस्था

कर्म स्वतंत्रता का तृप्ति बिन्दु स्वतंत्रता, जो स्वानुशासन के रूप में प्रमाणित

स्वतंत्रता = शिक्षा संस्कार, संविधान, व्यवस्था का सामरस्यता

स्वानुशासन = जीवन जागृति, मानव जागृति = 30 मूल्य पूर्वक जीना

समझदारी और प्रमाणिकता, प्रमाण सहज योगफल में मुक्ति

प्राणकोषा में रचना विधियों के अनुसंधानपूर्वक किसी जीव शरीर से मानव शरीर निष्पन्न

धरती की सर्व संपन्नता = चारों अवस्थाओं का प्रकटन

जागृति विधि साधना का प्रथम सोपान– न्याय दृष्टि से निरीक्षण परीक्षण

साधना= अभ्यास= अभ्यास त्रय

अभ्यास के मूल में विचार का चिंतनाभ्यासपूर्वक न्याय दृष्टि से निरीक्षण, परीक्षण

चिंतन = समझ और प्रयोजन के तृप्ति बिन्दु का साक्षात्कार

न्याय संबंध पर, धर्म व्यवस्था पर, सत्य अस्तित्वरूपी परम सत्य पर आधारित है।

न्याय सम्मत आचरण=मानवीयतापूर्ण आचरण

जागृति विधि साधना :– अस्तित्वमूलक मानव केंद्रित चिंतन का फल; ज्ञानत्रय पूर्वक संपन्न होनेवाली प्रक्रिया= व्यवस्था के रूप में जीना

जागृति की संभावना और समझदारी सहज आपूर्ति के अर्थ में मनोविज्ञान शास्त्र।

जागृति जीवन में; आचरण मानव में

मानव जीवन व शरीर के संयुक्त रूप में

मानव लक्ष्य– समाधान, समृद्धि, अभय, सह–अस्तित्व

जागृति की दिशा= मानवीयतापूर्ण आचरण

<u>जीवन में अविभाज्य मन में होने वाली 64 क्रियाएँ</u>

1. भक्ति– भजन और सेवा की संयुक्त अभिव्यक्ति; मानवीयतापूर्ण जीने की कला; जागृत मानव सहज व्यवहार(सामाजिक/धार्मिक)–कार्य(स्वावलंबी); जागृति सहज उत्सव

   भजन– भय मुक्ति क्रियाकलाप/विश्वासपूर्ण क्रियाकलाप

   सेवा– आवश्यकता, उपकार, कर्तव्य, दायित्व पूर्वक क्रियाकलाप; सेवनीय वस्तु विश्वास अन्य सभी मूल्यों के साथ परावर्तित; यही तन्यता का आधार

2. तन्मयता= रसों (मूल्यों) में तदाकार होना, मूल्यों का आस्वादन मन में होना एक स्वाभाविक क्रिया

   तन्मयता का सार्वभौम प्रयोजन :– विश्वास और उसकी निरंतरता की सार्थकता

   जागृति ही इष्ट, इष्ट के साथ ही भक्ति का प्रवाह

   भय मुक्ति जागृतिपूर्णता के साथ ही प्रमाणित

   भक्तिपूर्णता सहज प्रमाण= मानवीयतापूर्ण आचरण, व्यवहार, कार्य

   भक्त, भक्ति और भाव की अविभाज्यता सहज अभिव्यक्ति ही भक्ति की पराकाष्ठा

   जीवन का भक्ति स्वरूप होना तथा इष्ट और भक्ति में नित्य सामरस्यता, अविभाज्यता ही मौलिकता

   भक्ति संपूर्ण निष्ठा की अभिव्यक्ति; अभिभूत होना ही तन्मयता

   भक्ति – जागृतिपूर्णता सहज प्रयोजित होने में उत्सव; निर्भ्रमतापूर्वक भक्ति नित्य उत्सव

   अभ्यास विधि में निष्ठा परम–आवश्यक;

   अभ्यास का लक्ष्य – जीवन जागृति और व्यवहार में प्रमाण

   अस्तित्व सहज सत्यता, सह–अस्तित्व सहज वास्तविकता और जीवन सहज यथार्थता में निष्ठा का होना एक आवश्यकता

जागृत जीवन सहज प्रमाणिकता में निष्ठा – मौलिक प्रयोजन

सर्वतोमुखी समाधान में निष्ठा होना, भक्ति सहज प्रयोजन

अस्तित्व सहज परम सत्य में निष्ठा होना भक्ति सहज सार्थकता

मानवीयतापूर्ण आचरण में निष्ठा होना भक्ति सहज कार्य

भक्ति सहज निष्ठा का सार्थक आधार विकसित मनुष्य ही

स्वयं में ही भक्ति का आधार बिन्दु– जागृति

प्रतीकात्मक विधि से भक्ति का कोई प्रमाण नहीं

3. ममता – अपनत्व की पराकाष्ठापूर्वक पोषण, संरक्षण= ममत्व= मेरा पन

4. उदारता :– दूसरों की जीवन जागृति, शरीर स्वस्थता व समृद्धि हेतु आवश्यकतानुसार अर्थ(मन, तन, धन) का नियोजन

   परानुक्रम (शरीर, जीव जगत प्रेरणा) ममता कालांतर में अपेक्षा में परिवर्तित

   पूर्वानुक्रम विधि से मननपूर्वक मानना(मान्यताएँ) स्थापित, जो सर्वथा सामाजिक; शरीर यात्रा पर्यंत कार्यरत

   बच्चों को जागृत व्यक्ति बनाने में सहयोग के संदर्भ में पोषण

   मातृत्वः– पोषणकार्य में ममता; पितृत्वः– संरक्षण, पोषण

5. सम्मान– व्यक्तित्व और प्रतिभा की श्रेष्ठता की स्वीकृति एवं उसका संतुलन सहज प्रकाशन; मूल्यांकन क्रम में आवश्यकता

   किसी भी आयाम, दिशा, कोण, परिप्रेक्ष्य में श्रेष्ठता की स्वीकृति सहित प्रकाशन ही सम्मान

   श्रेष्ठता के प्रति अर्पित होने से स्वयं में सम्मान का अनुभव

6. सौहार्द्र – उभय तृप्ति में सामंजस्यता; विचार व मूल्यांकन की एकरूपता

   उदात्तीकरण= परस्परपूरकता

   मूल्यांकन अरहस्यतापूर्वक संप्रेषित; इसलिए सम्मान समारोह के रूप में संपन्न

   अभिव्यक्ति में श्रेष्ठता व्यंजनीयता (साक्षात्कार) के आधार पर मूल्यांकित

   व्यंजनाएँ मानव मूल्य, जीवन मूल्य, स्थापित मूल्य के प्रभाव के साथ, जीवन मूल्यों का बोध व अनुभव

सौजन्यता= परस्पर–पूरकता

श्रेष्ठता का ध्रुव

–मानव संचेतना=जागृति=जानने, मानने, पहचानने, निर्वाह करने में सामरस्यता

–अस्तित्व में प्रयोजनों के साथ प्रमाणित होना–

व्यवस्था व व्यवस्था में भागीदारी– परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में मानव लक्ष्य प्रमाणित

स्वानुशासन, स्वतंत्रता –लोकव्यापीकरण का प्रयोजन

सम्मान, सार्वभौमता के अर्थ में चरितार्थ

शिक्षापूर्वक संपूर्ण अवधारणाएँ स्थापित; प्रचार, व्यवहार, व्यवस्था पूर्वक पुष्ट

7. स्नेह – निर्विरोध न्यायपूर्ण व्यवहार; अभ्युदय हेतु स्वयंस्फूर्त मिलन

8. निष्ठा :– जागृतिपूर्ण लक्ष्य को निश्चित अवधारणा व स्मरण पूर्वक प्राप्त करने व प्रमाणित करने का निरंतर प्रयास

स्वयंस्फूर्त होना– जागृति पूर्वक

प्रवर्तित होना= अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी

शरीर– वंशानुषंगी; जीवन– संस्कारानुषंगी

मानव और नैसर्गिकता सहज स्वयंस्फूर्त पहचानना, निर्वाह करना

व्यवस्था को जानने, मानने के अनंतर पहचानने, निर्वाह करने के रूप में निष्ठा; अव्यवस्था मानव को वरेण्य नहीं, इस धरती पर अभी तक परंपरा के रूप में सार्वभौम व्यवस्था की पहचान नहीं

लाभोन्माद का निराकरण :– आवश्यकता से अधिक उत्पादन पूर्वक

9. पुत्र–पुत्री – शिक्षा–संस्कार प्रदान करना + पोषण सुरक्षा की स्वीकृति

10. अनुराग – आशित, अपेक्षित मूल्यों का निर्वाह

मानव– जीवन एवं शरीर के सह–अस्तित्व रूप में; संतान हेतु माता, पिता आवश्यक; क्लोनिंग विधि शरीर सापेक्ष, अतः पराभवित

अभिभावक :– अभ्युदय की कामना, कल्पना, योजना में अभिभूत

मानवीयतापूर्ण परंपरा = जागृत अभिभावक, शिक्षा(ज्ञानत्रय का समावेश), व्यवस्था(परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था)

वर्तमान में भ्रमित शिक्षा और व्यवस्थापूर्वक समस्याओं का विपुलीकरण

11.स्वामी(साथी)– अभ्युदय हेतु साथी के साथ स्वीकारपूर्वक अनुगमन करना; सर्वतोमुखी समाधान संपन्न व्यक्ति; औरों के अभ्युदय हेतु स्वामी; श्रेष्ठता और शुभ वांछित स्रोत, पूरक होना; स्वयंस्फूर्त विधि से कार्यरत

12.दायित्व– परस्पर व्यवहार, व्यवसाय और व्यवस्थात्मक संबंधों में निहित मूल्यानुभूति सहित शिष्टतापूर्वक निर्वाह

13.सहयोगी– पूरक विधि से प्रमाणित, पूरकता को स्वीकारना

14.कर्तव्य– जिस कार्य को करना स्वीकार किये हैं, उसमें निष्ठा बनाए रखना; संबंध व संपर्क में निहित मूल्यों का निर्वाह

संबंध व मूल्यों की पहचान और निर्वाह(सेवा) ही कर्तव्य

दायित्व और कर्तव्य सहज निर्वाह= सेवा= मूल्यों का आस्वादन

कर्तव्य– निष्ठापूर्वक सेवा को पूर्ण कर पाना

दायित्व– लक्ष्य सहित संबंध, मूल्य, मूल्यांकन, उभय तृप्ति, संतुलन, नियंत्रण

जागृति के अनंतर स्वयं स्फूर्त कर्तव्य= निष्ठा का द्योतक

सामाजिक संबंध (मानव) के आधार पर व्यवसाय संबंध सफल

लाभ, भय, प्रलोभन के बदले मूल्य आधारित मूल्यांकन

आवश्यकता से अधिक उत्पादन

संग्रह के स्थान पर आवर्तनशील अर्थव्यवस्था

सुविधा, भोग, अतिभोग के स्थान पर उपयोगिता, सदुपयोगिता, प्रयोजनीयता

15.स्वायत्त :– समृद्धि का अनुभव

16.समृद्धि :– आवश्यकता से अधिक उत्पादन– परिवार की सीमा में मूल्यांकित

लाभ और संग्रहपूर्वक– तृप्ति नहीं + नैसर्गिकता का विनाश

कामना के रूप में शुभ नित्य समीचीन

आवश्यकता से अधिक उत्पादन, शोषण विहीन विनिमय, न्याय सुलभता से वर्तमान में विश्वास

17.हित – शरीर सीमानुवर्ती उपयोगिता (पोषण, संरक्षण)

18.स्वास्थ्य – मन और प्रवृत्तियों के अनुरूप ज्ञानेन्द्रिय एवं कर्मेन्द्रिय युक्त शरीर की स्थिति

मानव

–मनाकार को साकार करना– सामान्य एवं महत्वाकांक्षा– उपयोग(शरीर पोषण), सदुपयोग(परिवार संरक्षण) व प्रयोजन(समाज गति)

–मनःस्वस्थता को प्रमाणित करना– प्रमाणिकता, सर्वतोमुखी समाधान, समाज न्याय एवं नियमपूर्ण उत्पादन को प्रमाणित करना

इस हेतु शरीर आवश्यक; जीवन स्वस्थ रहने पर ही शरीर का स्वास्थ्य सुनिश्चित

स्वस्थ शरीर

–संबंध में निहित मूल्य निर्वाह करने योग्य शरीर

– आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने योग्य शरीर

–ज्ञानत्रय सहज अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन योग्य शरीर

19.प्रिय :– 5 इंद्रियों के लिए शरीर स्वस्थता के अर्थ में अनुकूल संयोग

20.प्रवृत्ति :– इंद्रियों का अनुकूल योग–संयोग

प्रिय एवं प्रवृत्ति– मानवत्व सहित व्यवस्था के अर्थ में

जीवंततापूर्वक ही इंद्रिय सन्निकर्षात्मक क्रिया (अर्थ को साक्षात्कार करना); सुख–दुख को भासना, पर निरंतरता/सामाजिकता संभव नहीं

सुख, सुंदर, समाधान

व्यक्तित्वात्मक सौंदर्य– आहार, विहार एवं व्यवस्था में भागीदारी

स्वायत्त मानव, व्यवस्था के 5 आयाम में भागदारी

21.उल्लास – उत्थान की ओर पादर्शक प्रस्तुति और गति

22.हास :– मुस्कान सहित मानवीय लक्ष्य व दिशा की ओर गति

क्रम से उत्सव और मुस्कान के अर्थ में;

आधार–मानवीयता 'स्वत्व' के रूप में प्रमाणित

मन मान्यताओं के आधार पर क्रियाशील; मान्यताएँ शरीर मूलक होना भ्रम का कारण

परिवार ही समाज एवं व्यवस्था का आधार(न्यूनतम ध्रुव) और समग्र व्यवस्था ही अधिकतम ध्रुव

भ्रमवश विघटित परिवार व समाज आवेशात्मक एवं अवमूल्यन कार्यों को भय–प्रलोभन पूर्वक उत्साह का आधार मानता है।

मानवीयतापूर्ण व्यवहार, आचरण, व्यवस्था, व्यवस्था में भागीदारी के अर्थ में उत्सवित

जागृति सहित कर्तव्य–दायित्व के अर्थ में उत्सवित

23.शील :– शिष्टतापूर्ण अभिव्यक्ति

24.संकोच – अस्वीकृति को शिष्टतापूर्वक प्रस्तुत करना

परस्परता में शिष्टता की अपेक्षा; परंतु राष्ट्रीय, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक शिष्टताएँ, शिक्षा, व्यवहार, व्यवस्था सुलभ नहीं

शिष्टता = 9 शिष्ट मूल्य

प्रमाणों का आधार– मानव

संकोच :– यात्रा करने, सोने, खाने, पहनने–ओढ़ने में

उठने, बैठने, चलने, पानी पीने, व्यवसाय, व्यवहार, सेवा करते समय सामयिक अस्वीकृति को शिष्टतापूर्वक व्यक्त करना

25.गुरू :– शिक्षा संस्कार पूर्वक जिज्ञासाओं व प्रश्नों को समाधान के रूप मे अवधारणा में प्रस्थापित करने वाला; अप्राप्त को प्राप्त, अज्ञात को ज्ञात करने, होने के लिए विधि, नियम, प्रक्रिया सहज समझदारी में पारंगत बनाना

26.प्रामाणिक :– प्रमाणों का धारक–वाहक

ज्ञानत्रय को प्रमाणत्रय विधि से जीना

प्रमाणों की अनुभवमूलक अभिव्यक्ति; संपूर्ण प्रमाण प्रयोजन के संदर्भ में जागृति ही अनुभव प्रमाण; प्रामाणिकतापूर्वक ही परंपरा और व्यवस्था सफल

प्रमाणिक परंपरा को पाने हेतु आचार्य, शिक्षक, गुरू, व्यवस्थापक, संविधान एवं शिक्षा वस्तु का प्रामाणिक होना अनिवार्य

27.शिष्य :– जिज्ञासात्मक शिष्टता संपन्न व्यक्ति; जागृति लक्ष्य की पूर्ति हेतु; गुरू संबंध स्वीकृत; पूर्ण जिज्ञासा सहित प्रयत्न

28.जिज्ञासु :– शिक्षा ग्रहण करने हेतु तीव्र इच्छा

समझने की वस्तु– अस्तित्व, विकास, जीवन, जागृति, भौतिक–रासायनिक रचना

सीखने की वस्तु– मानवीयतापूर्ण आचरण कर्म– व्यवसाय में स्वावलंबन, व्यवस्था में भागीदारी, मानवीयतापूर्ण आचरण का अभ्यास, प्रामाणिकता सहज अभिव्यक्ति

प्रौढ़ता की पराकाष्ठा में से के लिए स्वानुशासन की जिज्ञासा

जिज्ञासाएँ अप्राप्त को प्राप्त, अज्ञात को ज्ञात करने के क्रम में; इस हेतु कल्पनाशीलता व कर्मस्वतंत्रता सतत प्रयासरत

जीवन तृप्ति = स्वतंत्रता, स्वराज्य में प्रमाणित होना

जागृत परंपरा = शिक्षा, संविधान, व्यवस्था, स्वास्थ्य–संयम

वर्तमान समस्या – प्रदूषण,तापवृद्धि(कारण–खनिज तेल, कोयला, विकल्प– सुर्य ऊष्मा, प्रवाह बल), बढ़ती जनसंख्या(कारण– असुरक्षा, मानव में निहित अमानवीयता), समुद्र जल सतह का बढ़ना, रोग(निराकरण– औषधि, उपचार, उपाय), भूकंप(निराकरण– निश्चित दिशा पहचान कर), बाढ़(निराकरण– सीमा पहचानकार), चक्रवात, तूफान (निराकरण– निश्चित दिशा व स्थान में)

समझदारी के अनंतर जगह की क्षमतानुसार जनसंख्या नियंत्रण

मानव संतान जिज्ञासु, अनुकरण, अनुसरण, आज्ञापालन, सहयोग, प्रवृत्ति

मानव संतान न्याय का याचक, सही कार्य–व्यवहार का इच्छुक, सत्यवक्ता

वर्तमान में शिशु की अपेक्षानुरूप समाधान एवं तृप्ति योग्य वस्तु का प्रौढ़ पीढ़ी में अभाव

सही कार्य–व्यवहार का इच्छुक– जीवन ज्ञान से व्यवहार में सामाजिक एवं व्यवसाय में स्वाबलंबनपूर्वक पूर्ति

सत्यवक्ता– अस्तित्व दर्शन से सत्यबोध पूर्वक पूर्ति

न्याय का याचक– मानवीयतापूर्ण आचरण में प्रमाणित होने से न्याय प्रदायी क्षमता

29.भाई–मित्रः–सहोदर / सहोदरवत्

30.प्रगति– समाधान प्रधान समृद्धि सहज अपेक्षा व प्रमाण

शुभकामनाएँ स्वयंस्फूर्त

मानवीयतापूर्ण प्रवर्तन कार्य – शुभकामना, स्नेह, विश्वास, उदारता, मूल्य एवं मूल्यांकन, नियमत्रय पालन, दयापूर्ण कार्य–व्यवहार, नैतिकतापूर्ण जीना

अमानवीयतापूर्ण प्रवर्तन कार्य – काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य

31.बहन :– उन्नति के अर्थ में संबंध / संबोधन

32.उन्नति – समृद्धि प्रधान समाधान सहज अपेक्षा

स्वायत्त मानव की अपेक्षा; रूप(सच्चरित्रतापूर्वक),बल(दया), पद(न्याय), धन(उदारता), बुद्धि(विवेकपूर्वक) में श्रेष्ठतापूर्वक चरितार्थ

सर्वतोमुखी समाधान= आचरण, व्यवहार, व्यवस्था कार्यों में मानवीयता आचरित होना

33.स्वीकृति : अनुभव से आप्लावित बुद्धि, चित्त,वृत्ति द्वारा मन को दिये गए संकेत को स्वीकारना एवं यथावत परंपरा मं प्रमाणित करने की प्रवृत्ति

34.स्वागत :– विवेक व विज्ञान सम्मत मानसिक, वैचारिक एवं ऐच्छिक तैयारियाँ; नियम,न्याय, धर्म, सत्य सहज स्वीकृतियाँ

संपूर्ण मूल्यों का स्वागत; इंद्रिय सन्निकर्ष में स्वागत का भास / आभास

जीवन में अविभाज्य मन द्वारा आस्वादन

मूलतः स्वीकृतियाँ अवधारणा के रूप में स्थापित

अवधारणा की वस्तु= मौलिकता= स्वभाव, धर्म

मानवत्व का सूत्र= नियम, न्याय, धर्म, सत्य

मानव जाति एक, कर्म अनेक– बहुआयामी व्यक्तित्व होने के फलस्वरूप

नियम, न्याय, धर्म, सत्य, समाधान, समृद्धि, अभय,सह–अस्तित्व सहज वैभव हर मानव में स्वीकृत; परावर्तन एवं प्रत्यावर्तन विधि से कार्यरत

35.रूचि– अनुकूल भौतिक–रासायनिक वस्तुओं के मिलने से प्राप्त परिणाम की पहचान

36.पहचान– इन्द्रिय सन्निकर्ष की चरितार्थता

हर मानव में शुभ की कामना

रूचियों की पहचान

–नियम रूपी सुख, न्याय रूपी सौंदर्य, व्यवस्था रूपी समाधान, मानव परंपरा में हर व्यक्ति के लिए सहज समीचीन

–संवेदनाओं के रूप में(इंद्रिय सापेक्ष)–सभी रूचियाँ क्षणभंगुर– व्यवस्था प्रमाणित नहीं, मानव लक्ष्य प्रमाणित नहीं

मानवाकांक्षा को प्रमाणित करने में आदर्शवाद और भौतिकवाद दोनों असमर्थ

आदर्शवादी विसंगतियाँ – सदग्रंथों में, आधारित विचारशैली, शास्त्र, समुदाय मानसिकता, जीने की कला में मतभेद/विसंगतियाँ

भौतिकवादी विसंगतियाँ – जड़ प्रकृति ही सबकुछ, धरती और वातावरण के साथ अधिकतम अपराध

परंपरागत स्वीकृत प्रवृत्ति– भक्ति–विरक्तिवादी(प्रयास), लाभ, भोग, काम उन्मादी(संघर्ष कर्म); मनुष्य ही प्रकृति एवं मानव का द्रष्टा; मानव को सही–सही पहचानने में चूक

मानव के संपूर्ण पहचान का आधार :– मानवीयतापूर्ण क्रियाकलाप

मूल्यों में रूचि सार्थक

37.सुख– समाधान

38.स्फूर्ति– समाधान को कायिक, वाचिक, मानसिक एवं कृत, कारित, अनुमोदित रूप में व्यवस्था में प्रमाणित करने के लिए तत्परता

जागृत जीवन सहज अक्षय बल एवं शक्ति की अनुभवमूलक अभिव्यक्ति, संप्रेषणा एवं प्रकाशन ही मनोविज्ञान की वस्तु

आशा – सुखापेक्षा सहित आस्वादन क्रिया

सुख – समाधान/उत्पादन–विनिमय सुलभता/न्याय के प्रति निष्ठा

चयन– रूचि, स्वागत और आस्वादन क्रियाओं में तत्पर

रूचि में सुख का भास; मूल्यमूलक प्रणाली से नित्य सुख

चतुर्थ परिवेशीय अंश की मान्यता पर आधारित क्रिया का नाम– मन; गति रूप– आशय सहित प्रत्यावर्तन–परावर्तन क्रियाकलाप

मानव जीवन व जीवन जागृति में समानता, समता व सह–अस्तित्व की पहचान और निर्वाह सुख है। यह अभ्यास सिद्ध प्रमाण है।

39.पति/पत्नी– विवाह संबंध

40.यतीत्व/सतीत्व

यतीत्व– यत्न/शोध पूर्वक समझना ही तरना

सतीत्व– सत्व/संकल्प निष्ठापूर्वक समझना ही तरना

संस्कृति = संबंध की पहचान, स्थापित–शिष्ट मूल्यों का निर्वाह

सभ्यता :– मानव एवं जीवन मूल्यों का वर्तमान में प्रमाणीकरण

विधि :– मानवीयतापूर्ण आचरण/आचार संहिता

व्यवस्था :– परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था

स्वतंत्रता और स्वराज्यपूर्वक मानव परंपरा में मानव लक्ष्य सुनिश्चित करना ही सार्थकता

परिवार रचना का आधार – संबंध

शरीर–संबंध(मानव संतानार्थ) ही अन्य संबंधों से भिन्नता का आधार

पति–पत्नी का मानस परिवार के आकार में होना+जीवन जागृति में संकल्प= एक मन दो शरीर; मानवीयता आधारित उभय मानसिकता की निर्णयों में एकरूपता

द्रष्टा पद को प्रमाणित करना ही यतीत्व/सतीत्व का तात्पर्य; द्रष्टा पद जीवन जागृति का प्रमाण– स्वानुशासन; एक पति/पत्नी व्रत भी यतीत्व/सतीत्व का प्रमाण

41.माता – संतान की स्वीकृत मानसिकता,भाषा,संबोधन,संबंध की पहचान,संस्कार का स्रोत

42.पोषण :–

शरीर स्वस्थता व मानसिकता का योग्यता, साधन, दक्षतानुरूप पोषण संपन्न

बोली, भाषा, खान–पान, संबोधन, जाति, धर्म, कर्म का मूल संस्कार माँ से संतानों में अंतरित/निक्षेपित

सुखापेक्षा में ही संबंधों की पहचान व निर्वाह

शरीर, भाषा, नाम, परिचय, संस्कृति का पोषण करने के क्रम में संस्कारों का निक्षेपण माँ द्वारा

बच्चे में उम्र के साथः— संबोधन + गौरव, विश्वास, सेवात्मक आचरण

मानवीयतापूर्ण संस्कार पोषण एक बुनियादी कार्य; मानव संस्कृति की अंकुरण क्रिया

अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में मानव संस्कार

संबंध, समाज, व्यवस्था, आचरण के प्रति अवधारणाओं को स्थापित करना ही शिक्षा—संस्कार

माँ का पोषण ही शरीर, संस्कार, शिक्षा, व्यवहार व आचरण की बुनियाद

शिक्षा — माँ, पिता, अभिभावक, बंधु— शिक्षा संस्थान— संविधान और व्यवस्था पूर्वक पूर्ण, मूल्यांकित व प्रमाणित

43. पिता

44. संरक्षण :— जीवन जागृति क्रम में निर्बाधता/सुगमता

संरक्षण का प्रधान कार्य — स्वास्थ्य, शिक्षा—संस्कार, संस्कृति—सभ्यता, आचरण व मूल्यों का आस्वादन

स्वास्थ्य संरक्षण— शरीर और मानसिकता के अर्थ में

मानसिकता संरक्षण— मानवीय संस्कार, शिक्षा, आचरण से

शरीर संरक्षण— अभ्यास, संतुलित आहार योजना, रोग—निवारण उपाय से संरक्षण

संबंधों को पहचानना जीवन में, निर्वाह शरीर व जीवन के संयुक्त रूप में प्रमाणित; जीवंतता सहित ही निर्वाह करना

स्वस्थ अभिभावक :— मानवीय संचेतना संपन्न

शिक्षा संस्कार :— स्वायत्त मानव के रूप में प्रमाणित + अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी के रूप में प्रमाणित

नाम संस्कार — संबोधन के अर्थ में; जाति संस्कार — मानव जाति के अर्थ में;

धर्म संस्कार — मानव धर्म(सर्वतोमुखी समाधान) के अर्थ में; दीक्षा संस्कार — जीवन जागृति, स्वानुशासन के अर्थ में; शिक्षा संस्कार — पहले चारो को सार्थकता प्रदान करना + स्वायत्त मानव + अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी

ज्ञानेन्द्रिय–कर्मेन्द्रिय क्रियाएँ

45. मृदु–कठोर

46. वहन–संवहन

47. शीत / उष्ण

48. पोषण

49. खट्टा

50. पोषण

51. मीठा

52. पोषण

53. चरपरा / तीखा

54. पोषण

55. कड़ुवा

56. पोषण

57. कसैला

58. पोषण

59. खारा

60. पोषण

61. सुगंध / दुर्गन्ध

62. प्रश्वसन / विश्वसन

63. सुरूप / कुरूप

64. अपनापन / परायापन

जीभ के संयोग में आई वस्तु का परिणाम पहचानना= स्वाद / रूचि / संवेदना – प्रयोजन = स्वस्थ शरीर

मृदु–संवहन :– स्पर्शेन्द्रिय से कम भार / दबाव सहन करने वाली वस्तु

कठोर– स्पर्शेन्द्रिय से अधिक भार / दबाव सहन करने वाली वस्तु

पोषण = इकाई + अनुकूल इकाई

शोषण = इकाई –प्रतिकूल इकाई

जीभ से रूचि, नाक से गंध(सुगंध–दुर्गन्ध), स्पर्श से दबाव(मृदु–कठोर), कान से भाषा(मृदु–कठोर), आँख से रूप(सुरूप–कुरूप)

मानव शरीर एक भौतिक–रासायनिक रचना; शरीर के संपूर्ण अंग–अवयव विशेषकर रसायन रचना

सभी प्राणकोषाएँ स्पंदनशील; अनुकूल रसायन, रस, विरलग्राही

मानव शरीर ज्ञानेन्द्रिय एवं कर्मेन्द्रिय युक्त; जीवंतता के साथ ज्ञानेन्द्रिय कार्यरत

जीवन ज्ञान के फलस्वरूप हर मानव स्वायत्त मानव + अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी

जीवन ज्ञान के साथ अस्तित्व दर्शन एवं मानवीयतापूर्ण आचरण समाहित

जीवन परमाणु के चतुर्थ परिवेशीय अंशों का नाम मन, क्रिया =चयन और आस्वादन

जीवन ही अनुभवरूपी संज्ञानशीलता(ज्ञानत्रय) को मन द्वारा शरीरगत मेधस पर प्रसारित करते हुए कार्य–व्यवहार में प्रमाणित। यही जीवन सहज संचेतना का प्रमाण। प्रमाण मानव परंपरा में ही संपन्न, हर मानव में प्रमाण सहज अपेक्षा।

जागृत जीवन के मन में 64 क्रियाएँ प्रमाणित।